

असाधारण EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii) PART II—Section 3—Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित PUBLISHED BY AUTHORITY

ਲਂ॰ 406] No. 406] नई बिल्ली, मुक्तवार, अगस्त 23, 1985/भाव 1 1907

NEW DELHI, FRIDAY, AUGUST 23, 1985/BHADRA 1, 1907

इस भाग में भिन्न पूष्ट संस्था वी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रक्षा जा सके।

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

विस मंत्रालय

(म्रापिक कार्य विभाग) (बैंकिंग प्रमाग) नई दिल्ली, 23 म्रगस्त, 1985 म्रिमुक्ताएं

का आ 621(स) — केन्द्रीय सरकार बैंकारी विनियमन प्रधिनियम 1949 (1949 का 10) की धारा 45 की उपधारा (7) के अनुसरण में क्षेत्र आफ कोचान लिमिटेड, कोचीन के मारतीय स्टेट बैंक के साथ समामेक्षन की स्कीम के संबंध में, जो उक्त उपधारा के उपबंधों के अधीन केन्द्रीय सरकार द्वारा मजूर की गयी है, 26 धानस्त, 1985 की विद्वित नाश्व के रूप में विनिदिष्ट करनी है।

[स. एक 17/11/85-की. ओ.III (i)]

MINISTRY OF FINANCE

(Department of Economic Affairs)
(Banking Division)
New Delhi, the 23rd August, 1985
NOTIFICATIONS

S.O. 621(E).—In pursuance of sub-section (7) of section 45 of the Banking Regulation Act, 1949 (10

of 1949), the Central Government hereby specifies the 26th August, 1985 as the prescribed date in relation to the scheme for the amalgamation of the Bank of Cochin Limited, Cochin, with State Bank of India which has been sanctioned by the Central Government under he provisions of the said sub-section.

[No. F. 17]11|85-BO. III(i)]

GISTERED No. D. (D.N.)-72

का. श्रा 622(श्र) — केद्रीय सरतार ने बैककारी विनियमन प्रिधिनियम, 1949 (1949 का 10) की धारा 45 की उपधारा (1) के स्रष्ठीन भारतीय रिजयें बैक द्वारा किए गए श्रावेदन पर, उक्त धारा की उपधारा (2) के श्रधीन बैंक श्राफ की बीन लिमिटेड के संबंध में उक्त धारा 45 की उपधारा (2) के श्रधीन श्रीधस्थान श्रादेश किया है।

और भारतीय रिजवंबेंक ने उनन अधिनियम की धारा 45 की उपधारा (4) द्वारा प्रदत्त सक्तियों का प्रयोग करते हुए भारतीय स्टेट बैंक के माण बैंक धाफ कोचीन लिमिटेड के समामेलन की रकीम तैयार की है।

और रिजर्व बैंक ने उक्त धार (की उपधार) (6) के उपप्रधों के अनुसार उक्त स्कीम का प्रारूप सर्वधित वैंगों को भेजने के पण्यात् और उक्त स्कीम की बाबत प्राप्त सुझावों और प्राक्षेपों पर विचार करने क परवात् वह स्कीम उपान्तरित की है और उसे मंतूरी के लिए केन्द्रीय सरकार को भेता है।

मब भन्न केन्द्रीय सरकार ने उक्त ब्रिश्चनियम की धारा 48 की उपधारा (7) द्वारा प्रदत्त गिक्नियों का प्रयोग करने हुए इसमे आहे. विशिष्ट निर्मधनों और शर्नों के अर्थान रहने हुए इस स्कीम को मंजूरी दे दी है।

 बैक प्राफ कोलीन निमिटेड, कोचीन अंतरक बैंक होगा और भारतीय स्टेट बैंक शन्तरिती बैंक होगा।

 ऐसी तारीख से जिसे केन्द्रीय सरकार उक्त अधिनियम की धारा 45 की उपधारा (7) के अधीन इस प्रयोजन के लिए विनिर्विष्ट करें, (जिसे इसमें इसके पस्थान विहिन तारीय कहा गया है) अंतरक बैंक के सभी प्रधिकार, शक्तिया, मांग, वाबे, हिन, प्राधिकार, विशेषाधिकार, लाभ, मास्तिया और जंगम और स्थावर सम्पत्ति, जिसके अंतर्गत मृ-धृति से सभी म्रापतनो या पटटों या करागें द्वारा भ्रामक्षित और उनमें भ्रन्तिबच्ट/ भाटकों ओर मन्य धनराशियों ओर प्रसंविदाओं के प्रधान परिसर, जिसके मधीन वे धारित हैं, सभी कार्यालय फर्नीवर, वियोजित उपस्कर संयंत्र, यंत्र और माधिन्न बहो, कागज-पन्न, लेखन सामग्री स्टाक, प्रन्य स्टाक और सामान, सभी स्टक्क विनिधान, और शेयर प्रतिमृतियां, हाथ में श्रीर प्रभिवहन में प्राप्य सभी हण्डियां सभी हाय की और लेखा की रोकड़ या बैकों के पास निक्षेत्र लेखा (जिसके अंतर्गत मांग पर या सक्षिप्त सूचना पर धन भी है) विलयन, सभी बहे ऋण, बन्धक ऋण और प्रतिभृतियों के फायरे सहित अत्य, ऋण या उसके कोई प्रत्याभृति अंतरक बैंक के कारबार के सबंध में सभी प्रत्य, यदि कोई, हों संपत्ति धधिकार, और सभी प्रत्याभृतियाँ के श्रास्ति सर्वधी फायदे इस स्कॉम के ग्रन्य उपबंधी के ग्रर्धन रहते हुए अंतरितो थैंक को प्रस्तरित हो जाएंगे और उसकी संपत्ति और ब्रास्तियां बन जाएगे और विद्वित सारीख से हो ग्रन्तरक बैंक के सभी दायित्व कर्तव्य और फायदे इसमें इसके पश्चान् उपबंधित विस्तार तक और रीति के अंतरिती बैक के दायित्व कर्नश्य और बाध्यकाएं होंगे और बन जाएंगें।

पूर्वगामी जिपबंधों की व्यापकता पर प्रतिकृत प्रभाव हाले बिना सभी संविद्याएं, विलेख, बंधपत्र, करार मुहतारनामें, विधिक प्रतिनिधित्व की मंजूरियों और किमी भी प्रकृति की प्रत्य पिखते जो विहित तारी खें के ठीक पहले प्रास्तिवर्शाल या प्रभावशील हो, प्रन्तरिती बैंक के विक्य या उसके पक्ष में इसमें प्राणे उपविधित विस्तार तक और रीति में प्रभावशाली होंगी और जैसे ही कार्यालित की जा सकेंगी मानों प्रन्तरक बैंक के स्थान पर अंतरिती बैंक उनमें पक्षकार रहा हो, मानों वे अंतरिती बैंक के पक्ष में अर्ग की। गई हों।

यदि विहित नारीस्त्र को अंतरक बैंक द्वारा या उसके विरुद्ध कोई बाद, अप्रील या किसी भी प्रव नि की कोई अन्य विधिक कार्यावाही लिबत है तो उसका उपणमन नहीं होता, वह बन्द नहीं होती या उसकर किसी भी रूप से प्रतिकृत प्रभाव नहीं पड़ेगा, किन्तु वह इस रकीम के अन्य उपबंधों के अशीन रहते हुए अन्तरिती बैंक के द्वारा या उसके विकद्ध नारी रखीं जा अनेती और प्रयंतित की जो सकेती।

यिः भारत से बाहर के कियी देण की विधि के मनुसार इस स्कीम के उपबंध उस देण में स्थित कियें ऐसी प्रास्ति या दायित्व को जो प्रन्तरक बैंक के उपक्रम के भाग हैं, अन्तरिती बैंक को अन्तरित या उसमें निहित करने का प्रभाव स्वयं नहीं रखते तो ऐसा का रिनाया दायित्व के संबंध में अंतरक बैंक का कार्य-कलाप विहित तारोध में अंतरिती बैंक के रात्ममय के मुख्य कार्यपालक अधिकारी में स्थरत हो जाएगा और यह मुख्यकार्यपालक अधिकारी ऐसा सभी पाक्ति का प्रयोग कर सकेगा तथा ऐसे सभी कार्य और वात कर सकेगा जो प्रभावी रूप से इसके कार्यकलाप के परिसमापन के प्रयोजन के लिए अंत बैंक हारा प्रयुक्त की जा सकती या की जा सकती है मुख्य कार्यपालक अधिकारी ऐसा अंतरण और निहित करने के प्रयोजन के लिए ऐसी सभी कार्यवाहियां करेगा जो भारत के बाहर कियी ए से देश की विधियो द्वारा अपेकित हो और उस संबध में मुख्य कार्यपालक अधिकारी था तो स्वयं या अपने द्वारा इस निमित्त प्राधिकृत किसी व्यक्ति के द्वारा अस्तरूप के देश की विधियो द्वारा अपेकित हो और असित्त कार्यकृत किसी व्यक्ति के द्वारा अस्तरूप कार्यपालक अधिकारी था तो स्वयं या अपने द्वारा इस निमित्त प्राधिकृत किसी व्यक्ति के द्वारा अस्तरूप कार्यपालक की अंतरित कर देगा।

3. अंतरक बैंक की बहियां बन्द की जाएंगी और उनकी सुलना की जाएंगी और सुलन-पन्न प्रथमन 27 प्रप्रैल 1985 को कारवार की नमाप्ति पर और सन्प्रकात् विहित तारीख की ठीक पूर्ववर्ती नारीख को कारवार की समाप्ति पर तैयार किया जाएगा तथा सुलन-पन्न चार्टड लेखाकार या चार्टड लेखाकारों की किसी ऐसी कर्म द्वारा जो भारतीय रिजर्व वैंक द्वारा इस प्रयोजन के लिए बनुमोदिन या नामनिर्दिष्ट की गई हो संपरीक्षित और प्रमाणित कराएं जाएंगे।

पूर्वगामी पैरा के उपबंधों के अनुसार नैयार की गई अलारक बैंक के तुलनपत्र की प्रत्येक प्रति अंतरक बैंक द्वारा प्राप्त हो जाने के पश्चात ययामंग्र की प्रत्येक प्रति अंतरक बैंक द्वारा प्राप्त हो जाने के पश्चात ययामंग्र की छा कंपनी रिजन्द्रार के पास फाइल की आएगी और तत्पश्चात अन्तरक बैंक से तुलन-पत्त या लाम और हानि लेखा नैया करने या उसकी प्रतियां कंपनी रिजन्द्रार के पास फाइल करों की या तुलन-पत्र और लेखों पर तिचार करने के प्रयोजन के लिए या कंपनी अन्य प्रयोजन के लिए या कंपनी प्रधितियम 1956 की धारा 159 के उपबंधों के अनुपालन करने के लिए शार्षिक साधारण अधिवेकन बुलाने की अपेक्षा नहीं की आएगी और तत्पश्चात अन्तरक बैंक के निदेशक बोर्ड के निए उस अधिनियम की धारा 285 की अपेक्षानुमार अधिवेजन करना आवश्यक नहीं होगा ।

- 4. 1--- मन्तरिनी बैंक, भ्रन्तरक बैंक के परामणे से निम्निनिष्टित उपवंधों के भ्रनुसार भ्रन्तरक बैंक की सम्पत्तियों और भ्रास्तियों का मृत्यांकन करेगा और दायित्यों की संगणना करेगा, श्रथीन :---
 - (क) सरकारी प्रतिभृतियों से भिन्न विनिधानों का मूल्याकन विहित सारीख की ठीक पूर्ववर्ती तारीख को निद्यमान बाजार दरीं पर किया जाएगा।
 - (ख) (1) मरकारी प्रतिमृतियों का मृष्यांकत भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा वैक कारी विनियमन प्रधितियम 1949 की धारा 24 के प्रयोजन के लिए जारी की गई प्रधिसूचना में प्रधिकथित सिद्धांनों के प्रमुगर विहिन गीति में ठेंक पूर्ववर्ती नारीख को यथा विद्याना रूप में किया जाएगा।
 - (2) केन्द्रीय सरकार की प्रतिभृतियों जैसे डाकधर-प्रमाणपत, ट्रेजरी बचत निक्षेप प्रमाणपत और केन्द्रीय सरकार की लघु बचत योजना के आधीन जाती की गई कोई अन्य प्रतिभृतियाया र माणपत्रों का मल्योकन उनके ग्रंकिन मृष्य के आधार पर या उनने तार ख को नकद प्राप्त मृत्य के आधार पर, इन दोनों में से जो स उवत्तर हो किया जाएगा।
 - (3) जहां किसा सरकारी प्रीमृति जैसे जमींदरी जरमूलन बंधपत्र या अन्य मामान प्रतिमृति जिसक. बाबत सूल किस्तों में देय है का बाजार मुल्य अभिनिशिचत नहीं नहीं किया जासकता है या किसो कारणवस यह माना जाता है कि वह उनका उचित मूल्य प्रविधित नहीं करता है शह अन्यमा उचित नहीं है तो प्रतिभृति का मूल्यांकन उत्पत्ती रकम पर किया जाएगा जो संदत्त किए जाने वाले बक्ताया मूल ग्रीर उनका व्याज को किस्तो को उन का लावधि को जिसके दौरान ऐस किस्त संदेय है सरकार द्वारा जार का गर्द किस प्रतिमृति के मूल्य को जिसने प्रतिभृति का संबंध है ग्रीर जिसके वैता हो या लगभग वैस है। परिपक्तता है तथा अन्य सुसंगत बातों को ध्यान में रखने हुए युधितसुक्त समझा जाता है।
 - (ग) जहां किसं प्रतिभृति, शेयर डिबेंचर, बंधपत्र या अन्य विनिधान का बाजार मूल्य उनके प्रमामान्य दातों से प्रभावित हो जाने के कारण युक्तियुक्त महीं माना जाना है, वहाँ विनिधान का मृल्यांकन किसा युक्तियुक्त कालाविध के दौरान उसके ग्रीसत बाजार मृल्य के आधार पर किया जाएगा।

- (घ) अहां किता प्रतिमृति, णेगर या द्विबंदर या अत्य विनिधात का बाआर मृत्य अभिनिश्चित नहीं किया का सकता है, कहां जारों करते याले समृत्यान की विस्तीय स्थिति, पूर्ववर्ती पांच वर्षों के दौरान उसके द्वारा संदत्त लाभों और अत्य मुसंगत बातों को ध्यान में रखते हुए, केवल ऐसे मृत्य को, यदि कोई है, हिमाब में लिया जाएगा जो युक्तियुक्त मृत्य माना जाएगा।
- (क) दावों की लुप्टि के लिए अजित परिमरों और अन्य सभी जंगम मंपत्तियों और किहीं आस्तियों का मूल्याकन उसके बाजारमृत्य पर किया जाएगा।
- (च) फर्तीचर और फिक्सचर, स्टाब की लेखन सामग्री और अन्य आस्तियां, यदि कोई हाँ, का मूल्यांकन प्रति बहा अधिकथित मूल्य के आधार पर या समूली योग्य मृत्य के आधार पर, भी भी युक्तियुक्त समझा जाए, किया जाएसा।
- (छ) अग्रिमों, जिनके अन्तर्गन क्रय की गई और मितिकांटे पर भुगतान को गई श्वेंडियों भी हैं, बही ऋणों और विविध आस्तियों की संक्षीक्षा अंतरित्री बैंक द्वारा की आएगी और प्रतिभृतियों जिनके अन्तर्गत उसके आवरक के रूप में धारित प्रत्याभृतियों भी हैं, अन्तरित्री बैंक द्वारा परेक्षित और मत्यापित की आएगी। परवान अग्रिम जिनके अन्तर्गत उनके माग भी हैं, दो श्रेणियों में वर्गीकृत किए जाएंगे, अर्थात "ये अग्रिम जिन्हें अच्छा और आमारी से वसूली योग्य माना गया हैं" और वे अग्रिम , जिन्हें आसानी से वसूली योग्य माना गया हैं और/या "जिनको धसूली कृतंत या संकास्पद है।
 - (ii) इस स्काम के प्रयोजनों के लिए दायित्यों के अन्तर्गत ऐसे सभी सभी समाध्रित दायित्व भी हैं, जिनके लिए अन्तरिती बैंक से बिहित तारीख को या उसके पण्चात् अपने स्वयं के स्रोतो से उचित रूप से पूर्ति करने की आणा या अपेक्षा की जा सकेंगी।
 - (iii) जहां किसी आस्ति का मूल्योकन विहित तारीख को अवधारित नहीं किया जा मकता है, वहां वह मारतीय रिजर्व बैंक के अनुमोदन से, मागतः या पूर्णतः किसी पश्चातवर्गी तारीख को वसूली योग्य आस्ति के रूप में माना जाएगा।

किसी अस्ति के मूल्यांकन और/या किसी अग्नि के वर्गीकरण और/या किसी दायित्व के अवधारण की बावत अन्तरितों बैंक और अस्तरक बैंक के बीच कोई असहमति है. तो वह मामला भारतीय रिजर्व वैवः को निर्देशित किया जाएगा जिसकी राय अन्तिम होगी, परन्तु जब तक ऐसी राय प्राप्त मही हो जाती तब तक अन्तरिती बैंक द्वारा महीं या उसके भाग का मूल्यांकन इस स्कीम के प्रयोजन के लिए अन्तिम ६५ में अपनाया जाएगा।

ऐसा करना आवश्यक होने की दशा में रिअयं बैंक के लिए ऐसी तकनी की राय प्राप्त करना आवश्यक होगा जो बहु आस्ति की ऐसी किसी मब के मूल्योंकन या वायित्व की ऐसा किसी मद के अवधारण के संबंध में समुचित समझे और ऐसी राय अभिप्राप्त करने का ब्यस अस्तरक बैंक का आस्तियों में से पूर्ण रूप से देय होगा।

पूर्वगामी उपबंधों के अनुसार आस्तिबोंका मूल्यांकन और दायित्वों का अवधारण दोनों बैंकों और उसक सदस्यों और लेनदारों पर आवषकर होगा!

5 अन्तरक वैक की संपत्ति और आस्तियों के अन्तरिती बैंक को अन्तरण होने के प्रतिफल स्थरूप अन्तरिती बैंक इसे और निस्निलिखित खण्डों में अणित बिस्तार तक अंतरक बैंक के दायित्वों का निर्वहन करेगा,अर्थात --

(क) बिहित तारीख तक कर्मचारीबृन्द प्रतिभूति निक्षेपीं सहित उस पर प्रोत्भृत स्थात, यदि कोई है, के साथ उस बैंक के पास अस्तरक वैंक के किया कर्मचारी द्वारा जमां की गई कोई धन^{*} राशि और विहित तारीख को नभी अस्य बाह्य दायित्व, जिसके अन्तर्गत निक्षेत्र नहीं है, मंदरन किए जाएंगे या उनकी पूर्ण व्यवस्था की जाएगी।

स्पष्टीक रण

इस पैरा के प्रयोधन के लिए बिहिन नारीख तक निक्षेप पर देश क्यांज नंबंध निक्षेप भाग माना आएगा।

(खा) प्रत्येक अन्तन बैंक खाले या चालू या खाले किसी अन्य निक्षेप को बाबत जिसके अन्तर्गत सार्थाध निक्षेप, नकद प्रमाण-पन्न, मासिक निक्षेपः भाग या संक्षिप्त सूचना पर देश निजेप या अन्तरक बैंक के पास कोई अन्य निक्षेप चाहे वे किसो भा नाम से जाने जाने हों और कोई अन्त्र खाने जो खण्ड (क) के अन्तर्गा नहीं आते हैं जिसके अन्तर्गत इस स्कीम के अर्थान देश सीमा तक ब्याज भी है । अन्तरिनी बैंक विहित तारीख को सम्बन्धित धारक/कों के नाम में एक तत्समान और बेसा हो खाता खोलेगा जिसमें बिहित तारीख को इस स्काम के प्रयोजनों के लिए पैरा (4) में निर्दिष्ट यथा मूल्यांकित आस्तियों में से प्रत्येक खाने के संबंध में जपनब्ध आनुपातिक शेयर मृत्य के रूप में जमा करेगा और इस प्रकार मूच्याकित उक्त आस्तियों में से वे अधिम जो आसिनी से बसूलों योग्य नहीं मीर्त गए हैं, या इवंत है या जिनकी **यसूर्ला गंकास्पद हैं, कोई** अत्य आस्तियार या आस्ति के भाग जो विहित तारोख को मुखांकित नहीं हैं और ऋस रकम जो ऊपर खण्ड (क) में वर्णित संदाय या उपबन्धी के निए अपेक्षित हैं, अपर्वापत किए आएंगे और इस प्रकार मृल्यांकित उक्त आस्तियों में अन्तरक बैंक को जारी किए गए तारीख 27 अप्रैल, 1985 के अधिस्यमन आदेश के पैरा 2 के खण्ड (क) (1) के आधार पर किए गए संदायों की संकलित रकम जोड़ेगा:

परन्तु 27 अप्रैल, 1985 को कारबार की ममाण्य को या उसके परवात और विहिन तारी के पूर्व किसी निक्षेप खाते से किए गए किसी संदाय की संगणना इस उस पैरा के अधीन जमा की जाने वार्ता रकम के महें का आएगी और तदनुसार जमा को जाने वार्ता रकम अनुसातिस शेयर होंगी जिसमें ऐसे संदाय की रकम कम कर की आएगी, परन्तु यह और कि वहां अन्तरितों बैंक को किसी विशेष खाते में की गई प्रतिदियों के सही होने के बारे में कोई युक्तियुक्त मंदिय है तो वह रिजर्ब बैंक के अनुमोदन से उत्तर खण्ड (ग) के अधार पर उस लेखें में किए जाने वाले अमा धनराणि को प्रतिधारित कर सकेगा अब तक कि अन्तरितों बैंक ऐसे खाते में गई। अतिशे अभिनिश्चित नहीं कर लेता है।

स्पर्द्ध(करणः

"आनुपातिक मद से, जहां तक वह इस पैण में आता है ऐसी संबंधित रकमों के अनुपात में अभिप्रेत है जो 27 अप्रैल, 1985 को कारबार की समाप्ति पर बकाया देय हैं (बिहित तारीख के ठींक पूर्ववर्ती तारीख तक देय क्याज सहित) और जहां तक वह इस स्क्रांस में अन्यन्न आता है, से ऐसी संबंधित रकमों के अनुपात में अभिप्रेत हैं जो संदाय या विवरण के समय बकाया देय हैं।"

(ग) ऊपर खण्ड (ख) में विनिदिष्ट जमा धनराणि दिए जाने के पण्यात अन्तरिनी वैंक संभवत कम में कम विलम्ब से किन्तु विहित तारीख में तीन मास तक निलेप बीमा और प्रत्यय गारन्टी निगम अधिनियम, 1961 के अधीन स्थापित निलेप बीमा और प्रत्यय गारन्टी निगम की (जिस इसमें इसके पण्यान निगम कहा पना है) एक सूची देगा, जिसमें सभी प्रकार में उस अधिनियम की धारा 18 की उपधारा (1) की अपेक्षाओं का अनुपालन किया गया है, और तत्यण्यान जब भी उस अधिनियम की धारा 18 की उपधारा (2) में निदिष्ट रक्षम निगम से

प्राप्त हो. अस्परितीः बैक उस तारीख या तारीखों से जिसकों रकम प्राप्त होती: है, सात दिन के अत्यर उस खाते से देश धनराणि के विस्तार तक, उस अधिनियम की धारा 18 की उपधारा (2) के अनुसार उपर खण्ड (ख) में निर्दिष्ट प्रार्थक खालों से जमा करेगा।

परम्तु:--

- (क) यदि खण्ड (ख) में निदिष्ट कोई खाता बन्द कर दिया गया है या वह ऐसे समय पर नव उस खाते में इसा के निष् रकम नियम से प्राप्त होतो है, परिषक्य हो गया है तो उनत रकम के हकदार ध्यक्ति का संदाय कर्नारती बैन क्षारा स्पाद रूप में किया जाएगा ।
- (ख) यदि खण्ड (ख) में निर्दिण्ट किसी एकम के एकदार व्यक्ति का पता नहीं लगाया जा सकता है या उसका अभाकों में पता नहीं खत पा रहा है तो ऐसे व्यक्ति को देव रक्तम के लिए उपबन्ध स्वस निनम बहियों में किया जाएगा और उसका पृथक रूप से लेखा दिया जाएगा तथा अन्तरिती बैकों को किसी रक्षम का सदाय करना निगम के लिए आयश्यक नहीं होगा जब तक कि रक्षम था अनदार व्यक्ति मिल नहीं जाती है या उमका पता नहीं चल आता है और निगम ने अन्तरिती बैक के माध्यम से व्यक्ति की बाबत सदास करने का विनिश्चस नहीं कर लिया है।
- (ग) बिहित तारीख की अस्तिरित बैंग की समायान पूजी की संपूर्ण रफम और आरक्षिती की बूबेन और शंकास्पद ऋण के लिए उपबन्ध के रूप में माना जाएगा और अन्तरफ बैंक की अन्य आस्तियों में अवधायण और अन्तरिक बैंक के सदस्यों के अधिकार अन्तरिमी बैंक के संशंध में ऐसे नीचे पैरा (6) में उपबंधित है।
- 6. निम्नलिखित की बाबन:---
- (क) पूर्वव्यतीं पैरा के खण्ड (ख) में वर्णित प्रत्येक लेखे की बाबत उद्य खण्ड ग्रीर खण्ड (ग) के ग्राधार पर किसी लेखे, यदि कोई हैं, में जमा न किया गया ग्रतिणेय; ग्रीर
- (ख) अन्तरक बैंक मंत्रस्पेक लेयर की यायन जिसकी रक्तम को बिहित मारीख से ठींक पूर्व प्रत्येक लेयर धारक के द्वारा या उसकी स्रोर से लेयर पूजी के महूँ समावत्न रूप में माना गया थाया नीचे (1) के अनुभारण में अस्तरिती बैंक द्वारा की गई मान के महूँ रकम संदल्त की गई थीं, मंगहरण रक्तम के रूप में माना जाएगा आर उसे अन्तरिती बैंक की बहियों में उस प्रकार दर्ज किया जाएगा और लेखा के विषद संदाय निम्नलिखित रीति में किया जाएगा, अर्थात् :---
- (1) (क) अन्तरिता बैंक प्रथमत ऐसे व्यक्ति से जो विहिन तारीख को श्रन्तरक बैक मे श्रास्थगित शेयर धारक के रूप में रजिस्ट्री-कृत था (या जो इस प्रकार रिजस्ट्रीकृत किए जाने का हकदार होता) ऐसी तारीखाया नारीखों सेतीन मास के भ्रन्टर जो विनिदिष्टकी जाए या जाएं, ऐसे सेयर या शेयरों धीर बकापा मागी, यदि कोई हों, की बाबत उसके द्वारा ध्यसंदन्त रह रही ध्रनाहुल रकम का संदाय करने की भपेक्षा कर सकेगा **भीर** तलाग्यात यदि यह भाषण्यक पाया जाता है तो वह ऐसे प्रत्येक व्यक्ति से जो विहित तारीख को, धन्तरक बैक के साधारण गेयर धारक के रूप मे राजिस्टीकृत या (या जो इस प्रकार राजिस्ट्रीकृत किए जाने का हकदार होता) ऐसी तारीख या तारीख से जो बिनि-दिंग्ट की जाए, तीन मास के अन्दर ऐसे ग्रेयर या शैयरी या बकाया मांगों, यदि कोई हों, की शायत उसकेदारा भसंदरन रह रही अनोहम रकम का संदाय करने की अपेका कर सकेगा ।

- (श्व) अन्तरक बैक प्रत्येक भामले की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए, व्यतिक्रम की कालावधि के लिए छ:प्रतिश याषिक व्याज सहित खण्ड (कं) के अधीन देय रकम के सदाय की माग और उसे प्रवतिन करने के लिए सभी उपलब्ध कदम उठाएगा।
- (2) अन्तरिती वैक श्रिप्रमों, क्रय या मितिकाटा किए गए भुगतान, हुँडियों, बही ऋणों श्रीर विविध ऋणों तथा श्रान्य श्रास्तियों की बाबत जो, ''ऐसे श्रिप्रमों के रूप में जो श्रासानी से वसूली योग्य गही है श्रीर या वसूली के लिए बूबत या शाकारपक्ष' है, के रूम में वर्गीकृत किया गया है', या

जो ऊपर पैरा 4 के ब्राधार पर बिहित तारीख के पश्चात् पूर्णतः या भागतः बसूली भोग्य है या हो सकते हैं, के संबध में मामले की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए, संदाय की माग ब्रीर उमें प्रवित्त कराने के लिए सभी उपलब्ध कार्यवाही करेगा परन्तु यह ब्रीर कि किसी ऋण या ब्रास्ति की रकम 50,000 स्पए से श्रिधक है, तो ब्रन्तरिती बैंक मारनीय रिजर्थ बैंक के अनुभोदन के बिना :

- (क) ऋणी या किमी भ्रम्य व्यक्ति के साथ कोई समझीता या ठहराव नहीं करेगा या किमी ऐमें ऋण या भ्रास्ति को बट्टे खाले नहीं डालेगा।
- (ख) उसे प्रन्तरित किन्ही प्रतिमृतियों का या उसके द्वारा ली गई किमी धारित का विकय या अन्यया व्ययन नहीं करेगा।
- (3) इसके मितिरक्त, मन्तरिती बैंक, बैंककारी विनियमन मिनियम, 1949 की घारा 45 ज के साय भीर कंपनी मिनियम, 1956 की भाग 543 के साथ भी पिठन बैंककारी विनियमन मिनियम, 1949 की घारा 45 ठ के अधीन अन्तरिती बैंक के किमी संप्रवर्तक, निदेशक, प्रबंधक या अन्य अधिकारी के विदश्च उच्च न्यायालय द्वारा नुकसानी के रूप मे प्रधिनिणीत की गई रक्तम, यदि कोई हो, की मांग करने मीर उनका संदाय करवाने के लिए अस्पेक मामले की परिस्थितियों को घ्यान में रखते हुए मभी उपलब्ध कार्यवाहियां करेगा;
- (4) अन्तरिनी बैंक, 'उपर्युक्त खण्ड "(i), (ii) भौर (iii) में उिल्लिखित मदों के कारण अपने द्वारा की गई वसूनियों में से किसी सभाशित वायित्व की वावत, और रिजर्व बैंक के पूर्व अनुमोदन से किसी ऐसे दायित्व, चाहे वह समाश्रित हो या अत्यानिक, की बाबत, जिसे उपर्युक्त पैरा (4) के निवंधनों के अनुमार निर्धारित नहीं किया गया था और जो विहित तारीन को या उसके परचात उद्भूत हुआ है या जिसका पता चला है, नंदाय कर सकेगा या उस सीमा तक, जोपैरा 5 क के अधीन उसके लिए किया गया उपबन्ध अपर्यान्त हो, उपलब्ध कर सकेगा;
- (5) धन्तरिती बैंक, उपर्युक्त खंड (i), (ii) भौर (iii) मे उहिल खित मदों के कण प्रपत्ते द्वारा की गई बसूलियों में से, उस प्रयोजन के लिए उपगत क्यय की भीर भारतीय रिजर्ब बैंक के मनुमोदन से ऐसे अन्य कार्यों की, जो उधित समझा जाए, उसमें से कटीती करने और उपर्युक्त खंड (iv) के निक्यनों के अनुसार उसमें से रकम बिनियोजित करने के पश्चास् या ऐसे धितशेष, यदि कोई हो, में से, जो ऐसे दायित्व की सोमा प्रतिम कर से अभिनिश्चत की जाने के पश्चात् इस स्कीम के प्रयोजनों के लिए यथा संगणित समाधित दायित्वों की बाबत उपबंध में से उपलब्ध हो।
 - (क) निक्षेप बीमा घीर प्रस्थय गारंटी निगम घिटिनियम, 1961 की धारा 18 की उपधारा (2) के घ्रधान मन्तरिनी वैंक द्वारा निगम खेपाप्त रकम भीर निगम द्वारा उपबंधित रकम सर्वि कोई हो का संदाय करेगा, भीर

(ख) ऐसे निक्षेप-अतिभों के मामले में, जिनकी बाबन अस्तिती यैक द्वारा कोई रकम निगम से प्राप्त नहीं की गई है, संग्रुग खाने की बाबत शोध्य रकमों का और ऐसे निजेन-गिपों के मामले में, जिनकी बाबत शनारिती बैंक द्वारा कोई रकम निगम से प्राप्त की गई है या निगम द्वारा उपत्रिवत को गई है, ति विद्वारा किए गए या उपवंधित संदाय की बाबन निगम का उसन खाते से शोध्य रक्षमों को उपर्युक्त उपवाह (क) के उपबंधों के अनुसार पहले संदत किए जाने के पश्चास उनके संग्रहण खाने में उन्हें शोध्य अतिभीय, यदि योई हो, का सदाय करेगा ।

परम्तु यह कि निगम को सोध्य रकम, यदि ऐसा करना प्रावश्यक हो को धन्तरिती बैंक की बहियों में उपबंधिन की जाएगी तथा निजेन बीमा और प्रस्थय गारंटी निगम साधारण बिनियम, 1961 के त्रिनिरम 22 के खड़ (ख) मे विनिदिष्ट रीति से निगम को संदन्त की जाएगी।

परम्तु यह घीर कि धन्मरिति बैंक, उपर्युक्त खंड (ख) में विनिर्विष्ट संदाय उस दशा में करेगा:—

- (i) यदि पैरा (5) के खंड (ख) मे उस्तिदित तत्त्रमान या समया खाते को बंद नहीं किया गया है या वह उन खाते में प्रत्यय द्वारा भूगतान के लिए परिपक्व नहीं द्वारा है; श्रोप
- (ii) यदि सक्त नाते को बद कर दिया गया क्षेत्रा वह नकद भुगतान के लिए परिपक्त हो गया है;
- (vi) उपर्युक्त खंड (v) के उपखंड (क) के निबंधनों के प्रतृमार निगम को प्रोध्य रकमीं और उन खंड के उरखंड (ख) के निबंधनों के प्रतृमार निक्षेपकर्ताओं के संग्रहण खाते में प्रोध्य रक्तमों की श्रेणी में घापस मे समान होगी, श्रीर यदि उतका संदाय पूर्णतः नहीं किया जा सकता नो उनमें समान घन्यात मे कभी होगी;
- (vii) इस पैरा के खंध (v) में निर्विष्ट संदाय के लिए जाने या पूर्णन उपबक्षित किए जाने के पश्चात्, प्रस्तित्व दिक, प्रांड (v) में निर्विष्ट रक्षमों के उस प्रतिशेष जो उसके पास उपलब्ध हो, में से, प्रस्तरक बैंक के भूतपूर्व शेवरधारकों के खाते में शोध्य रक्षम, यदि कोई हो, हेतु ऐसी राति से बीर उस सोमा नक, जो नी के बिनिविष्ट है, मानुपातिक सदाय करेगा.
 - (क) प्रथमतः सब खाने के लिए पूर्णतः संग्रय किए ताने तरु ग्रस्तरक बैक के भूतपूर्व प्रक्षिमान ग्रेयरधारकों के खाने में ग्रोध्य रक्षम, यदि कोई हो;
 - (ख) द्वितीयत. सब खाते के लिए पूर्यतः संबाय किए जने तक भंतरक बैंक के भूतपूर्व नामास्य सेयरघारकों के खाने से शोध्य रकम, यदि कोई हो, भीर उनके पावान्
 - (ग) तृतीयतः सथ खाते के लिए पूर्णतः मंदाय किए जाने तक ग्रन्तरक वैक के भूतपूर्व श्रास्थिति ग्रेयरशारकों के जाने मे ग्रीध्य रकम, यदि कोई हो,
 - (घ) उपर्युक्त उपखंड (क), (ख) भीर (ग) म उल्लिबिन सब रकम को पूर्ण तः संदत्त करने के परवात् अनिरितो सैंक के पास बाकी बैंचे अधिरोध का अनरक बैंक के मूनपूर्व सामान्य पोयरघारकों के बीच आनुपातिक वितरण किया जाएगा।

परन्तु यह कि यदि कोई प्रश्न उठता है कि उपर्युक्षन किसी उपखंड में उल्लिखित खाते के लिए कोई रक्षम शोध्य है या नहीं हो तो उसे भारतीय रिजर्व बैंक को निर्दिष्ट किया जाएगा जिसका उस पर विनिण्चय प्रतिम होगा।

- (viii) इस पैरा में निरिष्ट संग्रहण खाते में शोध्य रक्तम के वारे में क्षेत्रन अन्तरिती बैंक का दारित्व उस सीमा तक समझा जाएगा जो इस स्कीम के उपनेंधित हैं;
- (ix) विहिन तारीख या ऐसी पूर्वतर प्रविध से, जो फेन्द्रोग मरकार भारतीय रिजर्ब बैंक से परामर्ग फरने के पण्याम् इस प्रयोजन के लिए निर्निदिश्ट करे, बाग्ह नर्घ के प्रवसान पर इस पैरा के खंड (ii) में निर्दिश्ट किसी ऐसी मेद का, जो उस नारीख नक वसून नहीं की जा सकी हो मूह्याकन प्रकारितों बैंक दारा भारतीय रिजर्ब बैंक के परामर्ग से किया जाएमा और अन्तरितों बैंक, उस मून्यांकन को ध्यान मे रखते हुए, अवधारित कोई रकम, इस पैरा के खंड (iv) में निर्दिश्ट दायित्यों की पूर्ति के लिए प्रावस्यक किसी ऐसी राणि की जो उपर्युक्त खंड (v), (vi) और (vii) में उपबंधित कम और रीति से उस तारीख तक चुकायी जाने मे रह गई हो पहले उसमें से कटौती करके वितरित करेगा;
- (x) घन्तरिंग बैक, पूर्ववर्नी खंड (i), (ii) श्रीर (iii) में उल्लिख्त मदों के कारण, बसूल किए गए ऐसे धन को, जिनकी तुरन्त सदाय के लिए, उसके द्वारा प्रवेक्ता किए प्राने की संभावता नहीं है, अपने पास या किसी अन्य शैंक या वैकों के पास ब्याज वाले निक्षेपों में, ऐसी रीति श्रीर ऐसी अविध के लिए, जो मामले के तथ्यों श्रीर परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए उपयुक्त हो या जैसा भारतीय रिजर्थ बैंक निदेश दे, विनिहित करेगा। प्रोद्मूत ब्याज को यह (iv)(v), (vi) श्रीर (vii) में निर्दिष्ट वायित्वों की पूर्ति के लिए, उनमें उपदेशित रीति से उपयोजिन किया जाएगा।
- 7 किसी असिक्यक्त या विवक्षित संविदा में किसी अतिकृत सात के हात हुए भी पैरा (5) के निवंश्वनों के अनुसार अन्तरित, बैंक के पास खोले गए नए खाने की बावन ज्याज का संवाय निवा जाएगा और उसे केवल उन या जाने उत्तरवर्गी पैराओं के उपवंशों के जनुसार ऐसी दर्शे पर जो सक्तरिनी बैंक अनुतात करे, जमा किया जाएगा।
- 8. कोई भी निशेनकर्ता या फन्नरह बैंक का फन्य लेनदार, उसके प्रति प्रत्नरक बैंक के कियो दायित्य की ब बन प्रन्तरह बैंक या फन्नरिती बैंक से इस स्कीत द्वारा बिहिन सीक्षा के सिवाए, कोई मांग करने का हकदार नहीं होगा।
- 9 केद्रीय सरकार, भारतीय रिजर्ब बैंक या अन्तरिशी या अन्तरक बैंक के खिलाफ किया ऐसी बात के लिए कोई बाद या अन्य विधिक कार्य-नाहियां नहीं होंगी, जो इस स्काम के सनुपरण में सर्वाबपूर्वक की गई हैं याकी जाने के लिए आणियत हैं।
- 10 उत्तरवर्ता पैरा में विनिदिश्य बांधूवी विनिदिश्य कांग्रेवी स्थित प्रतरक में के के नमी को गरी लेवा मजते रहेंगे और यह समजा जाएता कि उन्हें अन्तरिती बैंक बारा उमी पारिश्रमिक और सेवा के उन्हीं निववनों और यार्ती पर नियुक्त किया मया है जो 27 अप्रैल, 1985 को कारवार बंद होने के ठीक पहुंचे रेते कर्षे करिया को एत् यों।
- प पु यह कि प्रश्वरक के के ऐसे कर्मवारी जिन्होंने प्रश्वरक वैंक या प्रश्वरिती में हु की, उस ताशीय, के, जिसकी यह स्कीम केन्द्रीय सरकार द्वारं मनूर किया गया है, जो हा प्रश्वामी एक मास के प्रवतात के पूर्व किसी भी समय प्रश्वरिती चैक के कर्मवारी न होने के अपने आशय के बारे में लिखित सूचना द्वारा मूचिंग किया है, श्रीसोगिक विवाद श्रिवित्यम, 1947 के उपवेधों के अधीं ऐसे प्रेसन, उपदान, भविष्य किया ऐसे प्रतिकर, यदि कीई हीं श्रीर ऐसे प्रेसन, उपदान, भविष्य निवि चीर से की निवृत्ति की यदे के सवाय के लिए हकदार होगे, जो 27 ग्रवेल, 1985 को कारवार के बंध होने के जीक पहले श्रन्तरक बैक के प्राधिक्षण निव्यों के प्रश्वीन साम न्य तौर पर ग्रनुक्षेय हो।

परन्तु यह शीर कि अन्तरक वैक के ऐते कर्मचिशियों को बावन, जिनके बारे में यह समझा आता है कि उन्हें उन्तरियों वैक के कर्मचारियों के रूप में नियुक्त किया गया है, अन्तरिय बैंक के बारे में थी यह समझा जाएंगा कि उसने अन्यरियों बैंक के बारे में थी यह समझा जाएंगा कि उसने अन्यरियों बैंग की सेवा में रहते के दौरान उनकी छंड़ियां की देणा में इस आधार पर छंड़ियां अनिकार के मंद्राय का दायित्व लिया है कि उनकी सेवानिरंतर बनी रहती है और अन्तरियों वैक भें उनके स्थानांतरण से विछिन्न नहीं हुई है।

11. इस क्लीम में उपाबद्ध अन्ताबों में विविदिष्ट टण्डिन, बिहिन तारीख को अन्तरक दंक के कर्मवार, नहीं रह जाएंगे और तत्यमय प्रवृत्त किमी विधि या किसी करार या संविता में दिसी बान के होते हुए भी, ध्रस प्रकार विनिदिष्ट व्यवित, केवल ऐंगे एंगन, उपदान, सविष्य निधि और अन्य सेवानिवृत्ति फायदे के हकदार होंगे, भी 27 अर्जन, 1935 को कर-बार के बंद होंने के टाक पहले अन्तरक वैक के प्राधिकरण निथमों के अवीन उन्हें सामान्य तीर पर अनुक्षेय हों।

परन्तु यह कि नियोजन की हानि के लिए प्रतिकर, यदि कोई हो, जहां एक उसका पर्वेद मेना की किमी संविद्ध के जनिन्नित भाग है, केनल नहीं होगा जो रिजने बैक द्वारा प्रवक्षितिक किया जाए (इस बन्दत जयका प्रविधारण प्रतिस और जायद्वकरहोगः)।

परन्तु यह धीर कि इसमें को किसो जान ने यह नहीं निभाग जाएना कि यह अन्तरिती बैंक को किसो ऐसे व्यक्ति के, निभका नाम इस स्कीम से उपाबध अनुसूची में विनिदिष्ट किया गया है, ऐसी हैपियत में और और प्रीरऐस निम्नधनों भीर महीं पर, जो अन्तरिती बैंक जिलत समर्थे, पुनिन्योजन करने से निवारित करती है।

12. प्रत्तरिती बैंक, उस नारीख से, निसको इस स्कीन को मंतूर किया जाता है, तीन वर्ष से प्रनिधिक प्रविध के प्रवसान पर, प्रत्नरिक बैंक के कर्मचारियों को वहीं पारिश्रमिक और रोश के वहीं निवंधन और मार्ने संदाय या मंतूर करेगा, जो अन्तरिती बैंक के नत्समान रैंक या अतिव्यति के कर्मचारियों को, प्रत्नरिती बैंक के ऐसे यत्य कर्मचारियों के निसान या समतुत्य प्रत्तक बैंक के उत्त कर्मचारियों के पाग पर्वताएं और अनुभव के प्रधीन रहते हुए, नागू हों।

परन्तु यह कियदि कोई शंका या मतमेद उतान होता है कि उपन कर्मचारियों में मे किसी की अहंताएं या अनुभव अन्तरिती बैंक के तत्वासीर रैंक या आस्थिति के जन्य कर्मचारियों को भईताएं और अनुभव के ममान या समझूल्य है या नहीं या वह अन्तरिती तैंक के बेनाना में कर्मचारियों का बेतन नियन करने के लिए अभगाए जाने वाले सिद्धांतों हा अक्ति, के मचंत्र में हैं, तो शंका या सतमेद को भारतीय रिजर्थ मैंक को निदिग्ध किया जाएगा जिसक उस पर विनिश्वय अंतिम होगा।

13. यथास्थिति, श्रम्तरक वैक या अन्तरिती बैक के कर्मवारियों के लिए गठित कियी। मिवष्य निधि श्रार/मा उपशान निधि के न्यासी या प्रधान सक, विहिन नारीख का या उसके प्रचान निधायों में प्रधान मिथि के न्यासी भिवण्य निधि श्रीर/मा उपशान निधि के न्यासी की, या अन्यथा जैना श्रन्तरिती बैंक निधेण दें, श्रम्पक बैक के क्येन।रियों के फायदे के लिए न्यास में धारित सब धन और विनिधान अन्तरित कर वैंगे।

परन्तु यह कि ऐसे परचान्वर्ती न्यासी, विविधानों के मूल्य में किसी कभी के लिए, या विद्ति तारोध के पहले किए गए कि से कर्य, उनका पर व्यक्तिक की बाबत दायी नहीं डींगे।

- 14 अन्तरिती बैंक, ऐसे विनरण और जानकारी भारतीय निजयं वैंक को भेजेगा, जो भारतीय निजयं बैंक इस स्कीम के कार्यान्वित करते के संबंध में समय-समय पर अपेक्षा कर।
- 15 अन्तरिती बँक, अन्तरक चैक के कार्यक्रकार का विवरण, ऐंदे प्राक्रम में और ऐंसे कालिक संतरानों पर, जो गरिनीय दिवर्ग वैह इक्

निमित्त विनिधिष्ट करे, प्रस्तारक बैंक क गोयरवारमां का भोनेगा । ऐसे विव-रणां को भोता जाना तब रोका जाएगा अब रिजर्थ बैंक ऐसा निवंश दे।

- (16) किसी ोा पूर्ता या प्रत्य मंपूर्ता के वर्ग में, जिएकी अन्तर्िती बैंक हारा दी जाने को अपेक्षा की जाती है, उस दणा में यह समझा जाएमा कि उसे सम्यक्ष्म से दे दिया गया है, यदि अन्तरक बैंक की पुस्तकों में रिजम्ट्रीहित पत पर, जब तक ि कोई नया पता अन्तरिती वैंक को पुस्तकों में रिजम्ट्रीहित न ही, प्रेरिती को संबोधित किया गया है प्रोर उसे पूर्व-गदस सामान्य डांक से भेज दिया गया है, प्रोर ऐसी सूचना उसे डांक में डांल जाने के पण्यात प्रकृत लीस घंटे के प्रवसान पर नामील की गया समझी जाएगी। इसके प्रतिरिक्त, किसी ऐसी सूचना या लंसूबना को, जो लार्बजनिक हित्त को हो, एक या प्रधिक दैनिक समाचार पत्नों में, अनका परिचालन ऐसं स्थानों पर हो जहां जैंक प्रान परिचारन रेस स्थानों पर हो जहां जैंक प्रान परिचारन रेस स्थानी पर हो जहां जैंक प्रान परिचारन रेस स्थानी किसी जाएगा।
- (17) यदि इस स्कीम के किसी। उपवेद का निर्देवन करने समय कोई गंका उताल होनी है तो मामले को भारतीय रिजर्व बैंक को निर्दिश्ट किया लायेगा और उसको राय निज्वायक होगी और अन्तरितो बैंक और अन्तरक बैंक रोनों पर तथा इस प्रत्येक बैंक के सभी सदस्यों, निक्षेत्रकातीओं आर अन्य लेनवारों तथा कर्मवारियों पर भी और किसी ऐसे अन्य व्यक्ति पर जिसका इन बैंकों में ने किया के निर्देध में गोई अधिकार या दायित्त्र है, आबद्धकर होगी।
- (18) यदि इस स्कीम के उपबंधों को ग्रमाथी करने में कोई कठिन इं उस्पन्न होती है तो केखीय सरकार, अन्तरक श्रीर अन्तरिती बैंकों को या उनमें से किसी को, ऐसे निदेश, जो इस स्कीम से अमंगत न हो, जारी कर संकेगी, जो केखीय सरकार को, भारतीय रिजर्य बैंक से परामर्ग करने के परनात् कठिनाई दूर करने के पराजन के लिए अध्ययक या उत्रपुक्त प्रतिन हो।

[नं. 17/11/85-वी. घो. III (ii)]

धनुसूची 🚶

बैंककारी विनियमन प्रधिनियम 1949 (1949 का 10) की धारा 45 की उपधारा (7) के प्रतिर्गत केन्द्रीय सरकार द्वारा स्वीकृत बैंक प्रॉफ इंडिया कोचीन लिमिटेड के विलय की योजना के साथ मेलका और उसके धंग के रूप में प्रतुग्रुवी।

कर्मवारी का नाम	स्रीतरक थैंक में संज्ञा
ाः र्जापोः, स्रार्ड, जान 2- श्रो जोसेफ फेन	मध्यक्ष सतकंता स्रबिकारी
अभिता मेरीकुट्टि तरियन	क।र्यक्रम समस्वयकर्ता
4. श्रीमी. श्री, एंटनी	महाप्रशंधक
5- श्रीजॉर्जे दक्षियम (निलंबनार्धीन)	भूतपूर्वे कार्मिक प्रबंधक
6. श्रीके.पी.प∷ल (निजबनाधोन)	प्रविकारी
7ः श्री एम∵ मी∵ जोस (तितेत्रनाधोत)	
8 भी टी . टी , जोस	शाखा प्रतिकरो चीनरभाखा
9. श्री सी. जे. लारेंस	ब्रक्षिकारो, पेरूम ^ग नूर णाखा
10 श्रीभ्रार पार्थसार्ग्या	प्रधिकारी, कोनम्बट्र
11. ओ डो, जे, मनाइन	श्रधिक री, पाटाचेरी गाखा
12 जो पाँच कॉसिस	ष्राधेकारी कट्टूर भा खा

13. श्री एम जे. थाम्स	प्रबंधक, तिरूची शाखा
14. श्री टी. जे. नैनन	प्रबंधक, चंगन।चेरी श⊺खा
15 श्रीएम. टी. एंटनी	ग्रधिकारी, पुस्तूबोझावावूर
16 श्री के. एम. चेरियन	श ग्खा प्रबंधक, पेरम्बाबूर
17. श्री जौनी पाल	ग्रधिकारी एर्नाकुलम,बाडवे
18. श्री एम. पी. सेवस्तियान	शाखा प्रबंधक, मट्टाचेरी
19. श्री के. टी. थाम्स	शाखा निरीक्षक, प्रवान कार्यालय
20, श्री ए. शंकर परमेश्वरन	ग्र धिकारी, प्रधान कार्यालय
21. श्रीयू.पी. वर्गिस	संयुक्त प्रबंधक

S.O. 622(E).—Whereas, on an application made by the Reserve Bank of India under sub-section (1) of section 45 of the Banking Regulation Act, 1949 (10 of 1949) the Central Government has made, under sub-section (2) of the said section 45 an order of moratorium in respect of the Bank of Cochin Limited, Cochin under sub-section (2) of the said section.

And whereas the Reserve Bank of India in exercise of the powers conferred by sub-section (4) of section 45 of the said Act has prepared a scheme for the amalgamation of the Bank of Cochin Ltd., Cochin with State Bank of India.

And whereas the Reserve Bank after having sent the said scheme in draft to the banks concerned in accordance with the provisions of sub-section (6) the said section and after having considered the suggestions and objections received in regard to the said scheme has modified that scheme and forwarded it to the Central Government for sanction.

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (7) of section 45 of the said Act, the Central Gevernment hereby sanctions the scheme on and subject to the terms and conditions hereinafer mentioned.

- (1) The Bank of Cochin Ltd.. Cochin, shall be the transferor bank and the State Pank of India shall be the transferee bank.
- (2) As from the date which the Central Government may specify for this purpose under sub-section (7) of section 45 of the said Act (hereinafter referred to as the prescribed date) all rights, powers, claims, demands, interests, authorities, privilages, benefits, assets and properties of the transferor bank, movable and immovable, including premises subject to all incidents of tenure and to the rents and other sums of money and covenants reserved by or contained in the leases or agreements under which they are held all office furniture, loose equipment. apparatus and appliances, books, papers, stocks of stationery, other stocks and stores, all investments in stocks, share and securities, all bills receivable in hand and in transit, all cash in hand and on current or deposit account (including mone) at call or short notice) with banks, bullion, all book debts mortgage debts and other debts with the benefit of securities, or any guarantee therefore, all other, if any property rights and assets benefit of all gurantees in connection with the business of the transferor bank shall. subject to the other provisions of this scheme, stand

transferred to, and become the properties and assets of, the transferee bank; and as from the prescribed date all the liabilities, duties and obligations of the transferor bank shall be and shall become the liabilities, duties and obligations of the transferee bank to the extent and in the manner provided hereinafter.

Without prejudice to the generality of the foregoing provisions, all contracts, deeds, bonds, agreements, powers of attorney, grants of legal representation and other instruments of whatever nature subsisting or having effect immediately before the prescribed date shall be effective to the extent and in the manner bereinafter provided against or in favour of the transferee bank and may be acted upon as if instead of the transferor bank the transferee bank had been a party thereto or as if they had been issued in favour of the transferee bank.

If on the prescribed date any suit, appeal or other legal proceedings of whatever nature by or against the transferor bank is pending, the same shall not abate, or be discontinued or be in any way prejudicially affected, but shall subject to the other provisions of this scheme, be prosecuted and enforced by or against the transferee bank.

If according to the laws of any country outside India the provisions of this scheme, by themselves, are not effective to transfer or vest any asset or liability situated in that country which forms part of the undertaking of the transferor bank to or in transferee bank, the affairs transferor bank in relation to such assets or liability shall, on the prescribed date, stand entrusted to the chief executive officer for the time being of the transferee bank and the chief executive officer may exercise all powers and do all such acts and things as would have been exercised or done by the transferor bank for the purpose of effectively winding up its affairs. The chief executive officer shall take all such steps as may be required by the laws of any such country outside India for the purpose of effecttransfer or vesting and in connection ing such therewith the chief executive officer may, either himself or through any person authorised by him in this behalf, realise any assets or discharge any liability of the transferor bank and transfer the net proceeds thereof to the transferee bank.

(3) The books of the transferor bank shall be closed and balanced and balance sheets prepared in the first instance as at the close of business on the 27th April, 1985 and thereafter as at the close of business on the date immediately preceding the prescribed date and the balance sheets shall be got audited and certified by the chartered accountant or a firm of chartered accountants approved or nominated by the Reserve Bank of India for the purpose.

A conv each of the balance sheets of the transferor bank rrepared in accordance with the provisions of the foregoing paragraph shall filed by the transferor bank with the Pegistrar of Companies as soon as possible after it has been received and thereafter the transferor bank shall not be required to prepare balance sheets or profit and loss accounts, or to Jay the same before its members or file copies thereof

with the Registrar of Companies or to hold any annual general meeting for the purpose of considering the balance sheet and accounts or for any other purpose or to comply with the provisions of section 159 of the Companies Act, 1956, and it shall not thereafter be necessary for the Board of Directors of the transferor bank to meet as required by section 285 of that Act.

(4) I. The transferee bank shall, in consultation with the transferor bank, value the property and assets and reckon the liabilities of the transferor bank in accordance with the following provision, namely:—

(a) Investments other than Government securities shall be valued at the market rates prevailing on the day immediately preceding the prescribed date.

- (b) (i) Government securities shall be value as on the day immediately preceding the prescribed date in accordance with the principles laid down in the notification issued by Reserve Bank of India for the purpose of section 24 of the Banking Regulation Act, 1949.
- (ii) The securities of the Central Government such as Post Office Certificates, Treasury Savings Deposit Certificates and any other securities or certificates issued under the small savings scheme of the Central Government shall be valued at their face value or the encashable value as on the said date, whichever is higher.
- (iii) Where the market value of any Government security such as the Zamindari Abolition Bonds or other similar security in respect of which the principal is payable in instalments is not ascertainable or is, for any reason, not considered as reflecting the fair value thereof or as otherwise appropriate, the security shall be valued at such an amount as is considered reasonable having regard to the instalments of principal and interest remaining to be paid, the period during which such instalments are payable, the vield of any security issued by the Government to which the security pertains and having the same or approximately the same maturity, and other relevant factors.
- (c) Where the market value of any security, share, debenture, bond or other investment is not considered reasonable by reason of its having been affected by abnormal factors, the investment may be valued on the basis of its average market value over any reasonable period.
- (d) Where the market value of any security share, debenture bond or other investment is not ascertainable, only such value, if any, shall be taken into account as is considered reasonable, having regard to the financial position of the issuing concern, the dividends paid by it during the preceding five years and other relevant factors
- (e) Premises and all other immovable properties and any assets acquired in satisfaction of claims shall be valued at their market value.
- (f) Furniture and fixtures, stationery in stock and other assets, if any, shall be valued at the written down value as per books or the realisable value as may be considered reasonable.

- (g) Advances including bills purchased and discounted, book debts and sundry assets, will be scrutinised by the transferce bank and the securities, including guarantees held at cover therefor examined and verified by the transferce bank. Thereafter the advances, including portions thereof, will be classified into two categories, namely, "Advances considered good and readily realisable" and "Advance considered not readily realisable and or doubtful of recovery".
- II. Liabilities for purposes of this scheme shall include all contingent liabilities which the transferee bank may reasonably be expected or required to meet out of its own resources on or after the prescribed date.
- III. Where the valulation of any asset cannot be determined on the prescribed date, it may, with the approval of the Reserve Bank of India be treated partly or wholly as an asset realisable at a later date.

In the event of any disagreement between the transferee bank and the transferor bank as regards the valuation of any asset and or the classification of any advance and or the determination of any liability, the matter shall be referred to the Reserve Bank of India, whose opinion shall be final, provided that until such an opinion is received, the valuation of the item or portion thereof by the transferee bank shall provisionally be adopted for the purpose of this scheme.

It shall be competent for the Reserve Bank in the event of its becoming necessary to do so, to obtain such technical advice as it may consider to be appropriate in connection with the valuation of any such item of asset or determination of any such item of liability, and the cost of obtaining such advice shall be payable in full out of the assets of the transferor bank.

The valuation of the assets and the determination of the liabilities in accordance with the foregoing provisions shall be binding on both the banks and the members and creditors thereof.

- (5) In consideration of the transfer of the property and the assets of the transferor bank to the transferce bank the transferor bank shall discharge the liabilities of the transferor bank to the extent mentioned in this and the following clauses, namely:—
 - (a) Any sums deposited by any employee of the transferor bank with that bank as staff security deposits together with interests, if any, accrued thereon up to the prescribed date and all other outside liabilities as on the prescribed date excluding deposits shall be paid or provided for in full.

Exrianation.—For the purpose of this paragraph, interest ravable on a deposit up to the prescribed date shall be regarded as part of the concerned deposit.

(b) In respect of every savings bank account or current account or any other deposit

including a fixed deposit, cash certificate, monthly deposit, deposit payable at call or short notice or any other deposit by whatever name ealled with the transferor bank and every other account not covered by clause (a), including interest to the extent payable under this scheme, the transferee bank shall open with itself on the prescribed date a corresponding and similar account in the name of the respective holder(s) thereof crediting thereto the pro rata share available in respect of each of the accounts out of the assets referred valued for the to in paragraph (4) as purposes of this scheme on the prescribed date, after excluding from the said assets as so valued the advances considered not readily realisable or bad or doubtful of recovery, any asset or portion of an asset not valued on the prescribed date and any amount needed for the payments or provisions mentioned at clause (a) above and after adding to the said assets as so valued the aggregate amount of the payments made in terms of clause (a) (i) of paragraph 2 of the moratorium order dated the 27th April, 1985 issued to the transferor bank.

Provided that any payment made from a deposit account on, or after the close of business on 27th April 1985 and before the prescribed date, shall be reekoned towards the amount to be credited under this subparagraph and, accordingly the amount to be credited shall be the pro rata share less the amount of such payment.

Provided further that where the transferee bank entertains a reasonable doubt about the correctness of the entries made in any particular account it may with the approval of the Reserve Bank, withhold the credit to be made in that account in terms of clause (b) above till the transferee bank is able to ascertain the correct balance in such accounts.

Explantion.—The term 'pro rata' shall, in so far as it occurs in this paragraph, mean in proportion to the respective amounts remaining due as at the close of business on the 27th April 1985 (together with interest payable up to the date immediately preceding the prescribed date) and shall in so far as it occurs elsewhere in this scheme, mean 'in proportion to the respective amounts remaining due at the time of the payment or distribution'.

(c) After the credits referred to in clause (b) above have been afforded, the transferee bank shall, with the least possible delay but in any case not later than three months from the prescribed date, furnish to the Deposit Insurance and Credit Guarantee Corporation established under the Deposit Insurance and Credit Guarantee Corporation Act, 1961 (hereinafter referred to as the Corporation) a list complying in all respects with the requirements of sub-

section (1) of section 18 of that Act and thereafter whenever amounts referred to in sub-section (2) of section 18 of that Act are received from the Corporation, the transferee bank shall credit each of the accounts referred to in clause (b) above, within seven days from the date or dates on which the amounts are received, to the extent of the sums due to that account in accordance with sub-section (2) of section 18 of that Act:

Provided that-

- (a) if any account referred to in clause (b) has been closed or has matured for payment at the time when any amount for credit to that account is received from the Corporation, the payments to the person entitled to the said amount shall be made by the transferee bank in cash;
- (b) in case the person entitled to any amount referred to in clause (b) cannot be found or is not readily traceable, provision for the amount due to such person shall be made and accounted for separately on the books of the Corporation itself and it shall not be necessary for the Corporation to pay the amounts to the transferee bank unless the person entitled to the amount is found or traced and the Corporation has decided to make the payment in respect of that person through the transferee bank.
- (c) On the prescribed date, the entire amount of the paid-up capital and reserves of the transferor bank shall be treated as provision for bad and doubtful debts and depreciation in other assets of the transferor bank and the rights of the members of the transferor bank shall, in relation to the transferee bank, be as provided for in paragraph (6) below:

(6) In respect of

- (a) every account mentioned in clause (b) of the preceding paragraph, the balance in the account, if any, remaining uncredited in terms of that clause and clause (c) and
- (b) every share in the transferor bank, the amount of which was treated as paid-up towards share capital by or on behalf of each shareholder immediately before the prescribed date andlor amount paid on account of the calls made by the transferee bank in pursuance of clause (i) below;

shall be treated as a collection amount and may be entered as such in the books of the transferee bank and payments against the account shall be made in the following manner, namely:—

(i) (a) the transferee bank shall, in the first instance, call upon every person who on

the prescribed date was registered as the holder of a deferred share in the transferor bank (or would have been entitled to be so registered) to pay within three months from such date or dates as may be specified, the uncalled amount remaining unpaid by him in respect of such share or shares and the cuils in arrears, if any and thereafter, if it is found to be so necessary, every person who was, as on the prescribed date, registered as the holder of an ordinary share of the transferor bank (or would have been entitled to be so registered) to pay within three months from such date or dates as may be specified, the uncalled amount remaining unpaid by him in respect of such share or shares or the calls in arrears, if any:

- (b) the transferee bank shall take all available steps having regard to the circumstances of each case to demand and enforce the payment of the amounts due under clause (a) together with interest at six per cent payannum for the period of the default;
- (ii) the transferce bank shall in respect of the advances, bills purchased and di counted, books debts and sundry debts and other assets, which are classified as "Advances considered not readily realisable and or bad or doubtful of recovery", or which are or may be realisable wholly or partly after the prescribed date in terms of paragraph (4) above, take all available steps having regard to the circumstances of each case to demand and enforce payment, provided, however, that if the amount of a debt or asset exceeds Rs. 50,000, the transferce bank shall not except with the approval of the Reserve Bank of India;
 - (a) enter into a compromise or arrangement with the debtor or any other person or write off any such debt or asset.
 - (b) sell or otherwise dispose of any securities transferred to it or any asset taken over by it.
- (iii) the transferee bank shall in addition take all available steps having regard to the circumstances of each case to demand and enforce the payment of the amounts, if any, awarded as damages by the High Court against any promoter, director, manager or other officer of the transferor bank under section 45L of the Banking Regulation Act, 1949, read with section 45H thereof and also with section 543 of the Companies Act, 1956;
- (iv) the transferee bank may, out of the realisations effected by it on account of the items mentioned in clauses (i), (ii) and (iii) above, make payment or provision in respect of any contingent liability to the extent that the provision made therefor under paragraph (5) (a) proves to be inadequate, as also with the prior approval

- of the Reserve Bank, in respect of any liability whether contingent or absolute which was not assessed in terms of pinagraph (4) above and ha arren or been discovered on or after the fix etitled cafe
- (v) the transferee bank shall out of the realisations effected by it on account of the items mentioned in clauses (i), (ii) and (iii) above after deducting therefrom the expenditure incurred for the purpose and, with the approval of the Reserve Bank of India, such other expenses as may be considered reasonable and the amount appropriated therefrom in term of clause (ii) above, or out of the balance, if any, which may be available from out of the provision in respect of contingent liabilities as reckoned for the purposes of this scheme after the extent of such liabilities has finally been ascertained,
 - (a) pay to the Corporation the amount received by the transferce bank from the Corporation under sub-section (2) of section 18 of the Deposit Incurance and Credit Guarantee Corporation Act, 1961 and the amount, if any, provided for by the Corporation, and
 - (b) pay, in the case of depositors in respect of whom no amounts have been receive! by the transferee bank from the Corporation, the amount; due in to rect of the collection accounts, and in the case of depositors, in respect of whom any amounts have been received by the transferee bank from the Corporation or have been provided for by the Corpora tion the balance if any due to them in their collection accounts after the amounts due from the said accounts to the Corporation in respect of the payment made or provided for by the Corporation have first been poid in secondance with the provisions of sub-clause (a) above:

Provided that the amount due to the Cornoration shall, if it becomes necessary so to do, be provided for in the books of the transferre bank and be paid to the Corporation in the manner specified in clause (b) of regulation 22 of the Deposit Insurance and Credit Guarantee Corporation General Regulations, 1961:

Provided further that the transferee bank shall make the payments referred to in clause (b) above.

- (i) if the corresponding or similar account mentioned in clause (b) of paragraph (5) has not been closed or has not matured for payment, by credit to that account, and
- (ii) if the said account has been closed or has matured for payment, in cash:

(vi) The amounts due to the Corporation in terms of sub-clause (a) of clause (v) above and the amounts due to the collection accounts of the depositors in terms of time-clause (b) of that clause shall rank equally among themselves, and if they cannot be paid in full shall abute in equal proportions;

- (vii) After the payments referred to in clause (v) of this paragraph have been made or provided for in tall, the transferce bank shall, out of the balance of the amounts referred to in clause (v) which may be available to it, make payments pro rata towards the amounts, if any, due to the accounts of the former shareholders, of the transferor bank in the manner and to the extent specified below:
 - (a) in the first place, the amounts, if any due to the accounts of the former preference shareholders of the transferor bank oil payment in full against all the accounts has been made;
 - (b) in the second place, the amounts, if any, due to the accounts of the former ordinary shareholders of the transferor bank till payment in full against all the accounts has been made; and thereafter;
 - (c) in the thill place, the amounts, if any, due is the accounts of the former deferred shareholders of the transferor bank till payment in full against all the accounts has been made;
 - (d) after all the amounts mentioned in subclauses, (a), (b) and (c) above have been paid in full, the surplus, if any, remaining in the hands of the transferee bank thall be distributed pro rata among the former ordinary chareholders of the transferor bank.
- Provided that if any question arises—whether any emonits are due against an account mentioned in any of the above sub-clauses, it shall be referred to the Reserve Bank of India whose decision thereon shall be final.
- (viii) the amounts due to the collection accounts referred to in this paragraph shall be deemed to be a highility of the transfered bank only to the extent provided for in this scheme;
 - (ix) on the expiry of twelve years from the prescribed date or such earlier period as the Central Government after consulting the Reserve Bank of India may specify for this purpose, any item referred to in clause (ii) of this paragraph which may not have been realised by that date shall be valued by the transferee bank in consultation with the Reserve Bank of India and the transferee bank shall distribute any amount or amounts determined in the light of that

- valuation after deducting therefrom first any sum necessary for meeting the liabilities referred to in clause (iv) of this paragraph which may remain unsatisfied as on that date in the order and the manner provided in clauses (v), (vi) and (vii) above.
- (x) The transferee bank shall invest such moneys realised on account of items mentioned in the preceding clauses (i), (ii) and (iii) as are not likely to be required by it for immediate payment, in interest bearing deposits with itself or with other bank or banks, in such manner and for such periods as may be appropriate having regard to the facts and circumstances of the case or as the Reserve Bank of India may direct. The interest accrued shall be applied for meeting the liabilities referred to in clauses (iv), (v), (vi) and (vii) in the manner indicated therein.
- (7) Notwith tanding anything to the contrary contained in any contract, express or implied, interest thall be paid in respect of the new accounts opened with the transferee bank in terms of paragraph (5) and credited in accordance with the provisions of that or the next succeeding paragraphs only at such rates as the transferee bank may allow.
- (8) No depositor or other creditor of the transferor bank shall be entitled to make any demand against the transferor bank or the transferee bank in respect of any liability of the transferor bank to him except to the extent prescribed by this scheme.
- (9) No suit or other legal proceedings shall lie against the Central Government, the Reserve Bank of India or the transferee or the transferor bank for anything which is in good faith done or intended to be done in pursuance of this scheme.
- (10) All the employees of the transferor bank other than those specified in the schedule referred to in the succeeding paragraph shall continue in service and be deemed to have been appointed by the transferee bank at the same remuneration and on the same terms and conditions of service as were applicable to such employees immediately before the close of business on 27th April, 1985:

Provided that the employees of the transferor bank who have, by notice in writing given to the transferor or the transferee bank at any time before the expiry of one month next following the date on which this scheme has been sanctioned by the Central Government, intimated their intention of not becoming employees of the transferee bank, shall be entitled to the payment of such compensation, if any, under the provisions of the Industrial Disputes Act, 1947 and such pension, gratuity, provident fund and other retirement benefits as may be ordinarily admissible under the rules of authorisations of the transferor bank immediately before the close of business on 27th April 1985:

Provided further that the transferee bank shall in respect of the employees of the transferor bank who are deemed to have been appointed as employees of the transferee bank be decined also to have taken over the liability for the payment of retrainment compensation in the event of the ransferee bank on the basis that their service has been cominnous and has not been interrupted by feer transfer to the transferee bank.

(11) The persons specified in the schedule annexed to this scheme shall on the preceded date cease to be the employee of the transferor bank and notwithstanding anything contained in any law for the time being in force or at y agreement or con race, the persons so specified shall be entitled to and only to such pension, gravity, provident fund and other retirement benefits as may be or a fully admissible to them under the rules of authorise has of the transferor bank immediately before the close of Lusiness on 27th April, 1985:

Provided that the compensation, it any, for the loss of employment, so far is it telds to the uncrpired portion of any contract or service, shall be such and only such as may be determined by the Reserve Bank (whose determination in this respect shall be final and binding):

Provided further that nothing herein shall be deemed to prevent the transfered pank from the imploying any person whose name has been specifically the schedule annexed to this scheme in such capacity and on such terms and conditions as the transferee bank may deem fit.

(12) The transferce bank shall on the expiry of period not longer to in three years from the date on which this scheme is saudioned, pay or grant to the employees of the transferor bank the same remaineration and the same arms and conditions of service as are applicable to the employees of corresponding rank or status of the transferee bank subject to the qualifications and the peak can be the said employees of the transferee bank such other employees of the transferee bank.

Provided that if any apath or difference arises as to whether the qualitations or capitalize of any of the said employed are the same as or equivalent to the qualifications and experience of the other employees of corresponding rank or status of the transferee bank or as to the procedure of principles to be adopted for the fixition of the pay of the employees in the scales of pay of the transferee bank, the doubt or difference shall be referred to the Reserve Bank of India whose decision thereon shall be final.

(13) The trustees or administrators of any provident fund and or gratuly fund constituted for the employees of the transferor bank or as the case may be the transferor bank shall on or as soon as possible after the prescribed late to infer to the trustee of the employees provident fund ancier gratuity fund constituted for the transferor bank, or otherwise as the transferor bank may direct all the monies and investment held in trust for the benefit of the employees of the transferor bank

Provided that such latter trustees shall not be liable for any deficiency in the value of investments, or in respect of any act, neglect, or default done before the prescribed date.

- (14) The transferee bank shall submir to the cerrice Bank of India such statements and information as may be required by the Reserve Bank of india from time to time for unding the implementation ratios scheme.
- half furnish to the half-half furnish to the half-half-half of the transletor bank a statement of affairs of the transletor bank in such form and at such periodical intervals as the Reherve Bank of India may specify in this behalf. The sending of such statements shall be discontinued when so directed by the Reserve Bank.
- (16) Any notice or other communication required to be given by the transferce bank shall be considered to be duly given it addressed and sent by the paid ordinary post to the addressee at the address registered in the books of the transferor bank, until a new address is registered in the books of the transferor bank, until a new address is registered in the books of the transferee bank, and such notice shall be deemed to be served on the expiry of fortyeight hours after it has been posted. Any notice or communication which is of general interest shall be advertised in addition in one or more daily newspapers which may be in circulation at the places where the transferor bank was transacting its business.
- (17) If any doubt arises in interpreting any of the provisions of this schrene, the matter shall be effected to the Reserve Bank of India and its opinion shall be conclusive and binding on both the transferce and transferor banks, and also on all the members, deposiors and other cultivors and employees of each of these banks and on any other person having any rights or liability in relation to any of these banks.
- (13) If any difficulty arres in giving affect to the provisions of this scheme, the Central Government may issue to the transferor and the transferee banks or to either of them surfi directions not inconsistent with this scheme as may applied to the Central Government, after consulting the Reserve Bank of India, to be necessary or appropriate for the purpose of removing the difficulty.

[F. No. 17|11 85-B.O.III-(ii)] SCHI DULL

Scholule attached to and formato part of the scheme for the analgement of the Ban's both n Ltd. Instance and by the Central Govern for Sub-amon (7) of action 47 of the Banking Regulation Act 1949 (10 or 1949)

Sl. No	Nat of the employee	Destraten su bank	the	transfer or
1	ne companie materialisment accordance incastalistica estatur acceptance est Z	3		
-				

1 Shri P I. Joha Chairman Shii Joseph Ferin Vigilaice efficer

3. Smt. Marykutty Tharian Programme Co-ordinator 4. Shri C.D. Antony General Manager Ex-Personnel Manager 5. Shri George Vaaniam (Under Suspension) 6. Shri K.P. Paul Officer (Under suspension) 7. Shrì M.C. Jose (Under suspension) 8. Shri T.T. Jose Branch Manager Chownnoor Branch Perumanoor Branch 9. Shri C.J. Laurence Officer, 10. Shri R. Parthasarathy Officer, Coimbatore Officer, Pottassery Branch 11. Shri D.J. Manadan 12. Shri Paul Francies A. . Officer, Katoor Branch. Manager, Trichy Branch 13. Shri M.J. Thomas Manager, Changanacherry 14. Shrì T.J. Nainan Branch . Officer, Puthuvipe 15. Shri M.T. Antony 16. Shri K.M. Chorian Branch Manager, Perumbayoon 17. Shri Johny Paul . Officer, Ernakulam, Broadw y Branch Manager, Mattancherry 18. Shri M.P. Sebastin 19. Shrì K.T. Thomas Inspector of Branches, H.O. 20. Shri A. Sanker Parames-Officer, H.O. waran . . 21. Shri U.P. Varghese . Joint Manager

का. अर. 623 (अ):--बैकिंग विनियमन अधिनियम, 1949 (1949 का 10) की धारा 45 की उपवारा (2) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयाग करते हुए और दिनांक 27 अर्जन, 1985 को इस मंत्रालय की अधिसूच ग स. टी. एस./1/85-वी. ओ. Ш में मेणीधन करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा निदेश देनी है कि दैवा आफ कोचीन लि., कोचीन के संबंध में उसके द्वारा जारी फिथे गये स्थानतावेश 25 अगस्त, 1985 तक जिसमें यह ताराख भी शामिल है, तानू रहेगा।

[सं. एक. 17/11/85-रां. ओ. III (iii)]

S.O. 623(E).—In exercise of the powers conferred by sub-section 2 of Section 45 of the Bank-Regulation Act, 1949 (10 of 1949), of this Ministry's Notification F. in modification No. TS 185-B.O. III dated the 27th April, 1985, the Central Government, hereby directs that the order of moratorium made by it in respect of the Bank of Cochin Ltd., Cochin, shall remain force upto and including the August, 25 1985.

[No. F. 17|11|85-B.O.III (iii)]

का० आ० 624 (अ) :-- केन्द्रीय सरकार, बैंककारी विनियमन अधि-नियम, 1949 (1949 का 10) की शारा 45 की उपधारा (7) के अनुसरण में लक्ष्मी कर्माशयल बैक तिभिटेड नई दिल्ली के केनरा बैंक के साथ समामेलन की स्कीम के संबंध में जो उक्त उपधारा के उपबन्धों के अधीन केन्द्रीय सरकार हार: मंजूर की गयी है, 24 अगस्त, 1985 को विहित तारीय के रूप में विनिर्दिष्ट करती है।

विं. एफ० 17/12/85-बी. ओ. III (i)]

S.O. 624(E).—In pursuance of sub-section (7) of section 45 of the Banking Regulation Act, 1949 (10 of 1949), the Central Government hereby specifies the 24th August, 1985 as the prescribed date in relation to the shceme for the amalgamation of the

Lakshmi Commercial Bank Limited, New Delhi, with Canara Bank which has been sanctioned by the Central Government under the provisions of the said sub-section.

[No. F. 17|12|85-B.O. III(i)]

का. आ 625 (अ) :--केन्द्रीय परकार ने बैंककारी विनियमन अधिनियम, 1949 (1949 का 10) की धारा 45 की उपधारा (1) के अधीत उपनेध्य रिजर्व बैक द्वारा किए गए अधिरत पर उक्त धारा की उपधारा (2) के अधीन, लक्षी कर्मामण वैश निर्मिटेड, नई दिन्ली के पद्मत्य में उत्तर बारा 45 की उपवारा (१) है अवीन अविस्थान ादेश कि ।

क्षार राजीय रिभव बैक ने उसा अजिनियम की भारा 45 की उप-धारः (1) झार प्रवत्त महोत्यों का अभी। काने हुए केनरा बैक के माय लक्ष्मों कमिल्यन प्रेंग निभिटेड के सक्षेत्रन का स्ट्रांस तैयार को है।

और रिजर्व केंक्र व उक्त धारा की उनभारा (6) के उपबन्धों के जनसार उक्त स्काम का प्रारूप संबंधित वैकी की भैदने के प्रकात और उनन रकीम की बाबत प्राप्त सुमावों और आक्षेमी पर विचार करने के पश्चात वह स्कोम उपान्त्ररित को है और उपे मंजरों के लिए केन्द्रीय गरकार को भेजा है।

अब अब के कि बीब सरकार ने उक्त अधिनियम को धारा 45 की उप-धारा (7) द्वारा पद्रत शक्तियों का प्रयोग करने हुए इसमें आगे विणत निवन्धनों और मर्ती के अधीन रहते हुए इस स्क्रीम को मंजूरी दे दी है।

1 लक्ष्मी कर्माणयत बैंक विचित्रेड, नई दिल्ली अन्तरक बैंक होगा आंर केनरा बँग अपरिता बैग होता ।

2 ऐसी तारोख थे जिशे केन्द्रीय मरवार उत्त अधिनियम की धारा 45 की उपधारा (7) के अधीन इस प्रयोजन के लिए विनिदिष्ट करे (भिने इसनें इसके एकात् विहित्त नारीख कहा गया है), अन्तरक बैक के सभी अधिकार, प्रक्तियां मांच, दाने, हित प्राधिकार, विशेषाधिकार, लाभ, अास्तियां और जेगम और स्थावर सम्पत्ति, जिसके अन्तर्गत स्-धृति के सभो आपतनों या पट्टों या करारी हारा आरक्षित और उनमें उस्तींबण्ट/ भाटकों और अन्य धनस्विधीं और प्रतिविद्याओं के अधान परिसर, जिस के अवीन वे धारित हैं मनी कार्यालय फर्तीचर, वियोजित उपस्कर, संयंत्र. यंत्र और साधित्र, बहो, कागज-पदा, लेखन सामग्री स्टाक, अन्य स्टाक और सामान, सभी स्टाक वितिधान, शैयर और प्रतिमृतिमां, हाथ में और अि-वहन में प्राप्य समी हाण्डियां, सभी हाथ की और लेखा की रोकड या वैंकों के पात निक्षेप लेखा (जिबके अन्तर्गत मांग पर या संक्षिप्त सचना पर धन भी है), वुलियन, समी बही ऋग, बन्धक ऋग और पतिभृतियों के फायदे सहित अन्य ऋण या उपनी कोई प्रत्याभृति अंतरक बैंक के कारवार के संबंध में सभी अन्य, यदि कोई हों, संपत्ति अधिकार और सभी प्रत्याभृतियों के आस्ति संबंधी फायदे, इस स्कीम के अन्य उपबंधों के अधीन रहते हुए अन्तरिती बैंक को अन्तरित हो जाएंगे और उसकी संपत्ति और अम्स्तियां वन जाएंने और विहित तारोख से ही अन्तरक बैंक के सभी * दायित्व, कर्तव्य और फायदे, इसमें इसके पश्चात् उपबंधित विस्तार तक और रीति में अन्तरिनी बैंक के दायित्व, कर्तव्य और बाण्यताएं होंगे और बन जाएंगे।

पूर्वभाशी उपवंधी की व्यापकता पर प्रतिकृत प्र व डाले बिना सभी संविदाएं विलेख, बंधपव, करार, मुख्तारनामें, विधिक प्रतिनिधित्व की मंजुरियां और किसी भी प्रकृति की अन्य लिखतें जो विहित तारीख के ठीक पहले आस्तिवशील या प्रभावणाली हों. अन्तरिती बैंक के विरुध या उसके पक्ष में इसमें आगे उपबंधित विस्तार तक और रीति में प्रशाव-शाली होंगी और जैसे ही कार्यान्वित की जा सकेंगी मानो अन्तरक बैंक के स्थान पर अन्तरिर्ता बैंक उनमें पक्षकार रहा हो, मानो वे अन्तरिती बैंक के पक्ष में जारी की गई हों।

यदि विहित नारीय को अन्तरक मैंक द्वारा पा उत्तके विरूद्ध कोई वाद अपील या किसी भी प्रमृति की कोई अन्य निध्यित कार्यवाही लंबित है तो उसका उपणमन नहीं होगा. वह बन्द नहीं होगी या उस पर किसी भी रूप से प्रतिकृत प्राव नहीं पटेगा. किस्तृ वह इप्त स्कीम के अन्य उप-बंधों के अपीन रहते हुए, अन्तरिती बैंक के दारा पा उसक विरुद्ध लारी रखी जा सकेगी और प्रवित्ति की जा सकेगी।

यदि । रत से बाहर के लिसी देश की विधि के अनुवार इस स्कीम के उपवन्ध उस देश में स्थित किसी ऐसी अधित या ताबित्व की जो अन्तरक बैंक के उपक्रम के भाग हैं, उस्तरिती बैंग को अस्तरित या उसमें निहित करने का प्रभाव स्वयं नहीं रखते तो ऐसी अस्ति या दारितव के संबंध में अन्तरक बैंक का कार्यकलाय बिहित तारीख से शर्लारती बैंग के तासमय के मुख्य कार्यपालक अधिकारी में लास्त हो जाए । और वह पारप कार्य-पालक अधिकारी ऐसी ससी पवित्यों का प्रयोग कर सकेगा तथा ऐसे सभी कार्य और बातें कर समुगा, जो प्रार्थ रूप से इसके कार्यकरात के परि समापन के प्रयोजन के लिए अन्तरिक हैं। द्वारा एययत की जा सकती या की जा सकती है। स्वयं कः पिलक अधिकारी ऐसा अस्तरण और सिहित करने के प्रयोजन के लिए ऐशा सभी कार्यविक्तां करेगा जो ारह के बाहर किसी ऐसे देश की विधियों द्वारा अपेक्षित को और उस संबंध में मुख्य कार्यपालक अधिकारी या तो स्वयं था अपने हारा इस निमिन्न प्राधिकृत किसी व्यक्ति के द्वारा अन्तरक बैंक की आस्त्रिया बबूल कर संक्षा या उसके दायित्व का निवहन करेगा और उसके शुद्ध आगमों का अन्तरिती बैंक को अन्तरित कर देगा।

3. अस्तरक वैंक की बहियां बग्द की जांगीं और उनकी तुनन की जाएभी और तुनन-पन्न प्रथमत: 27 अप्रैल, 1985 को कारबार की समाप्ति पर और तन्पण्चात् विहित तारीख की टीक पूर्ववर्सी तारीख को कारबार की समाप्ति पर तैयार किया जाएमा तथा तुनन-पन्न चार्टेंड शिखा-कार या चार्टे लेखानारों को किसी ऐसी फर्में द्वारा वो भारतीय रिजर्वें वैंक द्वारा इस प्रवोजन के लिए अनुमोदित या अनिविद्य की गई हो, संपरीक्षित और प्रवाणित कराए जाएंसे।

पूर्वगामी पैरा के उपबन्धों के अमुनार तैयार की गई अन्तरक बैंक के तुलन-पन्न की प्रत्येक प्रति अन्तरक थैंक द्वारा प्राप्त हो जाने के पणनात् ययासंभव भीन्न कंपनी रिजिर्ट्रार के पत्र जावन की जाएगी और परपश्चात् अन्तरक बैंक से तुलग-पन्न या ला जोर कृति दिशा तैयार करने या उसे सबस्यों के समक्ष प्रस्तुत करने का उसका अनियों कंपनी रिजिस्ट्रार के पाम फाइल करने की या तुलन-पन्न और लेखों पर विचार करने के प्रयोजन के लिए या किमी अन्य प्रयोजन के लिए या कंपनी अधिनियम, 1956 की धारा 159 के उपवंधों के अधुपातन वार्यों के लिए वा प्रयाचन साजारण अधिवेशन बुलाने की अपेक्षा नहीं की जाएगी और पत्यव्यात् अस्तरक वैंक के निदेशक बोर्ड के लिए उम्म अधिनयम की धारा 285 की अपेक्षातुमार अधिवेशन करना आवश्यक नहीं होगा ।

- 4. 1. अन्तरिती वैंक, अन्तरक वैंक के परामर्थ से निम्नलिखित उपवन्धों के अनुसार अन्तरक वैंक की सम्पत्तियों और आस्तियों का मूल्यांकन करेगा और दादित्वों की संगणना करेगा, अर्थात् ---
 - (क) सरकारी प्रतिभूतियों से मिन्न विनिधानों का मूर्त्यांकन विहित तारीख की ठीक पूर्वेजर्ती तारीख को विद्यमान बाजार दरों पर किया जाएगा।
 - (ख) सरकारी प्रतिभूतियों का गून्याकन ास्तीय रिजर्व वैंक द्वारा बैककारी विनियमन अधिनियम, 1949 की धारा 24 के प्रयोजन के लिए जारी को गई अधिसूचना में अधिकथित सिद्धांतों के अनुसार विहिन रोति में ठीक पूर्ववर्ती तारीख़ को यथा विद्यमान रूप में किया जाएगा।
 - (2) केन्द्रीय सालार की प्रतिभृतियों जैसे डाक्यर-प्रमाणपत्न द्रेजरी बचन निक्षेप प्रमाण-पत्न और केन्द्रीय सरकार की

क्षण् तस्तर येज्ञा के स्थित ज्योगी कि एं के के अध्यापित प्राप्त करें के अध्याप्त प्राप्त के स्थापित के के स्थापित के स्य

and the state of t

- (3) अडां कि वि सरकारी प्रतिकृति जैने अभीदारी उत्सूलन बंध पत या अस्य अध्यान प्रतिकृति विराक्ति बावत साल किस्ती वि वेश तै, जा बालार गुरूप अधिनिनिनत नहीं किया अ एकता है जा किसी स्वतीत नहीं किया अपने एकता प्रतिकृति हैं, तो प्रतिकृति का सुरुशंकन उपने राज्य पर किया अध्यान की मुद्दा का सुरुशंकन उपने राज्य पर किया अध्यान की महा का बात याया यह और बाजों क्या अध्यान की किसी बावा यह और बाजों क्या अधि किसी की उस काला प्रति को किया के किया किया की किसी की किया की किसी की किया को किसी की स्वतीत की प्रतिकृति की स्वतीत की सिमी प्रतिकृति की प्रविक्ता की किसी प्रतिकृति की प्रविक्ता की किसी प्रतिकृति की सिमी प्रतिकृति की प्रविक्ता की किया का मुद्दी की सिमी प्रतिकृति की प्रविक्ता की की स्वाम में स्वती कुए, प्रतिकृता जनवा का साल है।
- (ग) जहां किसी प्रतिनृति णेयर, डिविंग, वंब पत्र या अन्य विनिधान का बाजार सूर्य एएके अप्रशासक बातों से प्रावित हो जाने के कारण पुनित्युका नहीं माना भाग है, बहां विनि-धान का सूल्यांकन किसी युपिनुका कारणाध्यि के दौरान उसके औपत बाजार सूल्य के जाबार पर किया आएगा।
- (य) जहां कियं प्रतिसृति, शेपर या डिवेंबर या अस्य वितिक्षान का बायर मूला प्रतिस्थित नहीं किया का सकता है, वहां आर करों तो राष्ट्रायात व वित्त ती स्थिति, पूर्ववहीं पांच स्थी है दौष्टर एकी कारा नंदन गांधी और प्रस्य सुनात वार्ती की देवान में रवने हुए, केयन ऐसे पूल्य सी, यदि कीई है दिगाय में थिया प्रश्ना की हिंदापुषत मूल्य माना प्रत्या।
- (ड.) दर्शे क गुल्टि के निर्गतिन परिनरीं कार कत्य सभी जंगत नेगले में गीर किया क्रास्तियों का पृत्यांकन उनके बागार मृत्य पर विया अस्या
 - (स) फर्नीचर प्रारं फिक्तबर, स्टाक कं लेखा सामग्र और अध्य अधितयाँ, यदि कोई तों, का जूनवोक्त प्रति वह अधिकथित गुल्य के अधार पर सा वक्त योख जुल्य के साधार पर, जो भ युक्तिहुँवा समन्ता कार, किया जाएगा।
- (छ) अभिनों, निक्ति प्रतिकृति क्षत्र के नई और मितिकांटे पर भुगतान क गई दृष्टियां भ हैं, वह ऋणों ग्रौर विविव धास्तियों क संबक्षा अंतिरत वैक द्वारा के जाएगं और भित्तिनो जिनके धार्नित एउके पावरक के रूप में धारित प्रतान ियां भा है, इत्तरित बैक द्वारा जिल्लत ग्रीर सत्यतित क व्यक्ति । तत्त्वस्वात् सप्रिप्त जिनके राप्तांत उनके भाग भ हैं, दो भीषियों में बर्लीक्टर किए जल्ले, अर्थात् "वे अग्रिम जिन्हें अच्छा और आसात से यनून योग्य माना गया है श्रीर "वे प्रश्रिप, जिन्हें पालानं से प्रपुत योग्य नहीं माम गया है और या जिनक वर्गनी डबंत य' संकास्पद है। (ii) इस एक न के प्रयोजनों के निए दायितकों के अन्तर्वत ऐने सभा समाजित राजित्व च हैं, जिनके लिए अन्तरित बैंक से विहित नार ख को या उत्तके पक्ष्यान् अपने स्वयं के स्रोतों से उचित रूप से पूर्ति करने क. आणा या अपेक्षा क जा सकेगं। (iii) जहां किसे आलि का भ्रतांक्त विहित तार ब को श्रवधारित नहीं किया जा सहता है, उहा वह भारतंय रिजर्थ

बैन के पनुमोदन से, भागत या पूर्णत किस पश्चात्वर्ती सारख दा बसल योग्य प्रास्ति के रूप मे माना जाएगा।

िर प्रास्ति के मृत्याकत प्रीरया किस प्रशिम के वर्गीवरण ग्रारया किस दिश्म के श्रवधारण क वावत अन्तरित नेक ग्रीर ग्रत्नरक थैक के व न कोई अमहमित है, तो वह ममना भारत र रिजर्व रैक को निर्वेशित किया जाएगा जिसक राव शिन्म होग परन्तु जब तक ऐस राय प्राप्त नहीं हो जात तब तम ग्रन्थित बैक द्वारा मदो या उसके भाग वा मृत्याकम इस स्वम के प्रयोजन के लिए श्रनिनम रूप से अपनाया जाएगा।

ऐसा करना ग्रावश्यक होने क दणा मे रिजर्व बैंक के लिए ऐस नकन क राय प्राप्त करना ग्रावश्यक होगा जो वह प्रस्ति क ऐस किम सद के मृत्याकन या दायित्व क ऐसा किम सद के ग्रवधारण है मबध मे समुचित समझे, श्रीर ऐस राय श्रभिप्राप्त करने का व्यय ग्रन्तरक बैंक क श्रास्तियों में से पूर्ण रूप से देय होगा।

पूर्वणामे उपबद्यो के झन्मार श्रास्तियो का मूल्यांकन श्रीर दापिन्वों का अवधारण दोनो बैको ग्रीर उसके सदस्यों श्रीर लेनदारो पर स्रावद्धकर होगा।

5 अन्तरल बैंक क सपति और प्रास्तियों के श्रम्तरित बैंक को श्रम्तरण होने के प्रतिफल स्वरूप अन्तरित बैंक इसे और निम्नलिखित खण्डों में वर्णित विस्तार तक अतरक बैंक के दायित्वों का निर्वेहन करेगा, अर्थित ----

(क) विहित तारीख तक कपंचार वृन्द प्रतिभूति निक्षेपो सहित उस पर प्रोद्भूत ब्याज, यदि कोई है, के साथ उस बैक के पास ग्रन्तरक बैक के किम कर्मचार द्वारा जमा क गई कोई धनराशि अरे विहित तारीखो को सभी अन्य बाह्र दायित्व िपके ग्रामीत निक्षेप नहीं है, सदत किए जाएगे या उनक पूर्ण व्यवस्था क जाएग ।

स्पष्टीव रण

इस पैरा के प्रयोजन के लिए विहित तार ख तक निक्षेप पर देव व्यक्त सबद्ध निक्षेप का भार माना जाएगा।

(ख) प्रत्येक बचत वैक खाते या चालू खाने या किस अन्य निक्षेप क बाबत जिसके चन्त्रांत सावधि निक्षेप, नकद प्रमाण-पन्न, मासिक विक्षेप, मा। या सक्षिप्त स्चना पर देय निक्षेप या अन्तरक वै ने पास कोई ग्रन्य निक्षेप चाहे वे किस भ नाम से जे जाने हो और कोई ग्रन्य खाते जो खण्ड (क) के अन्तर्गत नहीं ३ ते है जिसके अन्तर्गत इस स्कन के अधीन देय समा ह व्याज भ ह। अन्नरित बैंक विहित तारख का सबधित धारव/को के नाम मे एक तत्समान ग्रीर वैसा ह खाता छ। तेमा जिममे विहित तारीख को इस स्कीम के प्रयोजनो के लिए पैरा (4) में निर्दिष्ट यथा मूल्याकित ऋास्तियों में से प्रत्येन खाते के सबध में उपलब्ध आनुपातिक शियर मूल्य के रूप मे जमा करेगा क्रोर इस प्रकार मूल्यािकत उक्न प्रास्तियों में से वे अग्रिम जो आसान से बसूल योग्य नहीं माने गए है, या डूबत है या जिनक वयल शकास्पद है, कोई यन्य आस्तिया या ग्यास्टि के भाग जो विहित तार ख को मूल्याकित नहीं है और अन्य रकम जो अपर खण्ड (क) मे वर्णित सदाय या उपबन्धो के लिए अपेक्षित हैं, अपवर्जित किए नाएगे और इस प्रकार मूल्याकिन उवन अस्तियो मे भ्रन्तरक बैंक को जार किए गए तारीख 27 भ्रभैल, 1985 के ग्रिधिस्थभन भादेश के पैरा 2 के खण्ड (क) (1) के ग्राधार पर किए गए सदायो क सकलित रकम जोडेगा।

परन्तु 27 धप्रैल, 1985 को नारवार क समाप्ति को या उसके पश्चात् और विहित तार ख रे पृव किस निक्षेप खाते से किए गए किस सदाय क मगणना उन उप पैरा के प्रधन जमा क जाने वाल रकम के मदा क ाएग और तदनुमार जमा क जाने वाल रकम के मदा क तएग , परन्तु यह और कि जहा अन्तरित बैंक को किस विघेप दाने मे क गई प्रविष्टियों के सह होने के बारे मे नोई युक्तियुक्त सदेय है ता वह रिजं बैंक के अनुमोदन मे उपर खण्ड (ग) के आधार पर उस लेखें मे किए जाने वाले जमा धनराशि को प्रतिधारित कर मकेगा जब तक कि अन्तरित बैंक ऐसे खाते मे मही अतिथेप अभिनिश्चित नहीं कर लेता है।

स्पष्ट करण

"ग्रानुपातिक पद से, जहा तक वह इस पैरा मे ग्राता है ऐसे सबिवत रकमों के अनुपान में अभिन्नेत है जो 27 अन्नैल, 1985 को कारबार क समाप्ति पर बकाया देय हैं (विहित तार ख के ठ क पूर्ववर्ती तार ख तक देय ब्याज सहित) ग्रीर जहा तक वह इस स्कम में ग्रान्यत ग्राता है, से ऐस सबिवत रकमों के अनुपात में ग्राभिन्नेत हैं जो मदाय या विवरण के समय बकाया देय हैं।"

(ग) ऊपर खण्ड (ख) मे विनिर्दिष्ट जमा धनराशि दिए जाने के पण्चात् अन्तरित बैंक सभवत कम से कम विलम्ब से किन्तु विहित तारिंख से तन मास तक निक्षेप ब मा और प्रत्यय गारट निगम अधिनियम, 1961 के अध न स्थापित निक्षेप व मा और प्रत्यय गारट निगम को (जिसे इममे टमके पण्चात् निगम कहा गया है) एक सूच देगा, जिसमे सभी प्रकार से उस अधिनियम क धारा 18 को उपधारा (1) क अपेक्षाओं का अनुपालन किया गया है, और तत्यश्चात् जब भ उस अधिनियम क धारा 18 क उपधारा (2) मे निर्दिष्ट रकम निगम से प्राप्त हो, अन्तरित बैंक उस तारीख से जिमको रकम प्राप्त होत है, सात दिन के अन्दर उस खाते मे देय धनराशि के विस्तार तक, उस अधिनियम क धारा 18 क उपधारा (2) के मनिर्दिष्ट प्रत्येक खातो मे जमा करेगा।

परन्तु ---

- (क) यदि खण्ड (ख) में निर्दिष्ट कोई खाता बन्द कर दिया गया है या वह ऐसे समय पर जब उस खाने में जमा के लिए रकम निगम से प्राप्त होत है, परिपक्व हो गया है तो उक्त रकम के हकदार व्यक्ति को सदाय अन्तरित बैंक द्वाग नकद रूप में किया जाएगा,
- (ख) यदि खण्ड (ख) में निर्देण्ट किस रहम के हकदार व्यक्ति का पता नहीं लगाया जा सकता है या उसका आसान से पता नहीं चल पा रहा है तो ऐसे व्यक्ति को देग रहम के लिए उपबन्ध स्वय निगम को बहियों में किया जागा और उसका पृथक रूप से लेखा दिया जाएगा तथा अन्तरित बैंक को किस रकम का सदाय करना निगम के लिए आवश्यक नहीं होगा जब तक कि रकम का हकदार व्यक्ति मिल नहीं जाता है या उसका पता नहीं चल जाता है और निगम ने अन्तरित। बैंक के माध्यम से उस व्यक्ति क बाबन सदाय करने का विनिज्वय नहीं कर लिया है।
- (ग) विहित तारीख को अन्तरित बैंक क समादस पूज का सपूर्ण रकम और आरक्षिता को डूबत और शकास्पद ऋण के लिए उपबन्ध के रूप में माना जाएगा भीर

भ्रम्सन्य तैय स्व क्ष्मा भ्रास्थियों में अयक्ष्मा भ्रांच जन्सरन भैंक ने रावादी ने क्षांचार अवस्थित मैंक के निम्नोति कि कि कि ती कि निम्नोति (6) ने जल्लीकारी।

- 6. निम्नलिखित क बावल · ·
- (क) पूर्वव्यति पेरा के खण्ड (स्तो में विश्वित प्रत्योग योग्डी के बाबत उस खण्ड ग्रीट खण्ड (गा) कि श्राह्मण पर जिला लेखि यदि कोई हैं, में जना न किया पता अधियोगः ग्रीट
- (ख) अन्तरक बैंक में प्रत्येत ग्रीयर कर दावस जिस्सा उसम को विहित तार ख से ठ क पूर्व अध्येक लेपर धारक के अस या उसक छोर से ग्रीयर पूंज के महे समादत्त का में माना ग्रीया या न चे (1) के धनुसरण में अन्तरित बैंक हारा क गई भाग के गई एकम मंग्रीय के पाई भाग के गई एकम मंग्रीय के प्रतियो प्रतियो प्रतियो विश्व के सिक्द संदाय निम्नलिखित र ति में ग्रीया ग्रीया श्रीया श्रीय लेखा के निम्द्र संदाय निम्नलिखित र ति में ग्रीया ग्रीया श्रीया श्रीय निम्नलिखित र ति में ग्रीया ग्रीया श्रीया श्रीय निम्नलिखित र ति में ग्रीया ग्रीया श्रीया श्रीय निम्नलिखित र ति में ग्रीया ग्रीया श्रीया श्रीया श्रीया निम्नलिखित र ति में ग्रीया ग्रीया श्रीया श्रीया स्वीत्र भ्रीया स्वीत्र भ्रीया स्वीत्र भ्रीया स्वीत्र भ्रीया स्वीत्र स्
- (1) (क) ग्रन्तरितं बैक प्रथमतः ऐसे व्यक्ति से जो विद्वित नार ख को अन्तरक बैंक में शास्यिका मेयर धारक के रूप में रिजिन्द कृत था (या जो इस प्रशार रिजिन्द कृत किए जाने का हकदार होता) ऐस तार धा मा पार खों से तन मध्य के प्रत्वर जो वििर्दिष्ट क जाए या जाएँ, मुंसे भोगर या रोजरों जीए बरास संगी रहि कीई हों, क बाबत उसी द्वारा असंबंध भूरह असबूर रहन हा संदाय करने क अपेक्षा कर गोधन औं। तंत्पण्यात् यदि यउ राज यक पाया जाता है तो वह ऐसे ब्रह्मेश व्यक्ति से जो विदिन तार ख को. अन्तरक दीन के साधारण शेयर धारक के रूप में रिक्ट़ कुछ था (या जो इस प्रकार रिकस्ट कृत िए जाने का तकतार होता) ऐन तार ख या तर ख से जो विभिर्दिण्ट क जाए, त न माम के जन्दर ऐसे शेयर या जैयरों रा दकाया मांगों, यदि कोई हो, क' वायत उसके हारा अभेदन रह रही अनाहत रकम का संदाय करने क अवेक्षा कर सकेशा!
 - (ख) अन्तरक वैंग प्रत्येक सामले क परिस्थितियों को ध्यान में रखने हुए, व्यक्तियम का कालातांत के पिए का प्रतिभात वर्षिक ब्याज सहित खण्ड (के) के उधान देश रका के संवाध क जांच प्रति प्रतित गरने के लिए सम उपलब्ध प्रयम प्रश्ना।
- (2) अन्तरित बैंक अग्रिमी, का या निविधाट जिए गए अगवान, हुंडियों, बहु ज्युणी इर्गर विशिध प्रमुणा तथा सक्य भारत भासितां। क बाधन जो जिए जिल्ली के रूप में ली, अपान से बसूता योग्य गर्ही है स्रोप या प्राणी की रूप हुंद्र्य या घंकास्पद्य हूं, के रूप में जी जिए गर्म के प्रमास हैं, के रूप में अजिल किया प्राणी की स्था है या जो जपर पैंग । के प्राचार पर शिहित सारख के पश्चात पूर्णत या भागण बहाल पीग्य है या हो समने हैं, के संवध के मामने क पिराधालियों की धना में रखते हुए, संवध का मांग छोर उसे प्रवित्त कराते के लिए सभा उपवाद कार्यवाह करेगा परन्तु यह छीर कि विजा ऋण सा खासित क रकम 50,000 घ्रमए से प्रवित्त हैं, तो अन्तरित से भारत य रिजर्व बैंक के अनमीदर के बिना:
 - (क) ऋण या किस अन्य व्यक्ति के साथ कोई समझीता या ठहराव नहीं करेा था किन ऐसे ऋण या आस्ति को बट्टे खाते नहीं डालेगा।
 - (ख) उसे अंतरित किन्हीं प्रतिम्हियों का या उसके द्वारा ल गई किस प्रास्ति का विकय या अन्यया य्ययन नहीं करेगा।

- (3) एक अभिनिया, अन्तरित बैंक, वैंकनारं विनियमन अधिनियन, 1943 का घारा 45-ज के गाप और कंपन अधिनियन, 1956 के घारा 543 के साथ भ पठित वैंककारो
 विनियम अविनियम, 1959 के धारा 45-ठ के अर्ध न
 अंदरित बैंक के निय चेन्नर्तक, निदेशक, प्रबंधक या अन्य
 ग्रीधकार के विकित उच्च न्यायालय हारा नुकसान, के क्य
 में जिल्लिक गई रूकम, यदि कोई हो, के मांग करने
 योग उनका संदाय करवाने के लिए प्रत्येक मांगले के परिप्रितियों को ध्यान में रखने हुए मंग उपलब्ध कार्यवाहियां
 करेगा
- (4) अस्तरित र्यक, उपर्युक्त खण्ड (1), (2) ग्रीर (3) में उल्लिखन महीं के कारण अपने द्वारा क गई बम्नुलियों में से किसी समित्रित दायित्व क बावत. ग्रीर रिजर्व बैंक के पूर्व अनुसोदन से किन ऐसे दायित्व, चाहे वह समाश्रित हो या अरमीतिक, के बावत जिसे, उपर्युक्त पैरा (4) के निवंधनों के अनुमार निर्मारित नहीं किया गया था ग्रीर जो बिहित तार ख को या उसके पश्चात् उद्भूत हुआ है या जिसका पता चला है. मंदाय कर सकेगा या उस स मा तक, जो पैरा 5-क के अब न उसके लिए किया गया उपवंध ग्राप्यांप्त हो, उपवंध कर सकेगा;
- (5) अस्तरिकं बैंक, उममुक्त खंड (1), (2) और (3) में उलिलिश्वित मदों के कारण अपने द्वारा क गई वसुलियों में से, उस प्रमोलन के लिए उपनत ज्यय क और भारतंय रिलर्व बैंक के अनुमोदन से ऐमें अन्य ज्ययों की, जो उचित समझा जाए, उसमें से कटौत करने और उपर्युक्त खण्ड (4) के निधंदानों के अनुसार उसमें से रकम विनियाजित करने के प्रभात या ऐसे अतिशेष, यदि कोई हों, में से जो ऐसे दायित्वों को सभा अंतिम रूप से अभिनिश्चित क जाने के पश्चात् इस स्कम के प्रयोजनों के लिए प्रथा संगणित समाश्चित दरित में को बान उनवंद्य में से उन्तरूप हो;
 - (क) सिक्षेप ब मा और प्रत्यय गारंट' निगम अधिनियम, 1961 क धारा 18 क उपधारा (2) के अध न अन्तरित बैंक हारा निगम से प्राप्त रकम और निगम हारा उपशंधित रकम, यदि कोई हो, का संदाय करेगा, श्रीर
 - (स) ऐसे निक्षेप कर्ताक्रों के मानने से जिनक बाबत अन्तरितं वैक द्वारा कोई रक्षम निगम से प्राप्त नहीं का गई है. संग्रहण खाने की बाबत शोध्य रक्षमों का और ऐसे फिलेप कर्तायों के मामने में, जिनक बाबत अन्तरित वैंक तारा कोई रक्षम निगम से प्राप्त का गई है या निगम हारा जगर्ववित के गई है, निगम हारा किए गए या उपविधित मंग्रह के भावन निगम को उथन खाने से शोध्य रक्षमों की उपर्युक्त उपाण्ड (क) के उपर्यक्षों के अनुसार पहले संदत्त किए जाने के पश्चात् उनके संग्रहण खाते में उन्ह शोध्य ऋतिशेष, यदि कोई हो, का संदाय करेगा।

परन्तु यह कि निभम को शोध्य रकम, यदि ऐसा करना धावप्रक हो तो, श्रन्तरित वैंक क बहियों में उपबंधित को जाएग तथा निक्षेप ब मा और प्रत्यय गारंट निभम साधारण वितियम, 1961 के विनियम 22 के खण्ड (ख) में विनिर्दिष्ट र ित से निभम को संदत्त क जाएग ।

- परन्तु यर् भ्रौर कि जन्मिन नैव, उपर्याप खण्ड (ख) मे विनिर्दिष्ट महाय उस दणा में बरेगा -
- (1) यदि पैरा (5) के खण्ड (ख) मे उन्लिखित तत्ममान या समरूप खाने को बद नहीं किया गया है या वह उस खाने में प्रत्यय द्वारा भुगतान के लिए परिपक्व नहीं हुआ है, श्रार
- (2) यदि उक्त खाते को वद कर दिया गया है या नह नकद भुगतान के लिए परिपक्त हो गया है।
- (vi) उपयुक्त खण्ड (v) के उपखण्ड (क) के निबंधनों के जनुसार निगम को शोध्य रकमो और उम खण्ड के उपखण्ड (ख) के निबंधनों के अनुसार निक्षेपकर्ताओं के सम्रहण खाते में शोध्य रकमों की श्रेणी आपस में समान होगी और यदि उनका मदाय पूर्णत नहीं किया जा सहता तो उनमें समान अपुपान में कमी होगी,
- (vii इम पैरा के खण्ड (v) मे निर्दिष्ट सदाय के लिए जाने पा पूगा उपबधित किए जाने के पश्चात् अन्तरिती बैंक खण्ड (v) में निर्दिष्ट रकमो के उस अतिशेष, जो उसके पास उपलब्ध हो, में से, अन्तरक बैंक के भूतपूर्व शेयर धारकों के खाते में शोध्य रकम, यदि कोई हो, हेतु ऐसी र ति से और उस मीमा तक, जा नीचे विनिर्दिष्ट हे, आनुपातिक सदाय करेगा
 - (क) प्रथमत मब खाने के लिए पूर्णतः संदाय किए जाने तक अंतरक बैक के भूतपूर्व अधिमान शेयर धारकों रे खाते में शोध्य रक्षम यदि कोई हो,
 - (ख) द्वितीयत: सब खाने के लिए पूर्णत: सदाय किए जाने तक अंतरक बैंक के भूतपूर्व सामान्य शेयरक्षारकों के खाते में शोध्य रकम यदि कोई हो और उसके प्रवात,
 - (ग) तृतीयत .सब खाते के लिए पूर्णत सदाय किंग जाने तक अन्तरक बैंक के भूतपूर्व आस्यिति शेयरबारकों के खाते में शोध्य रकम यदि कई हो,
 - (घ) उपर्युक्त. उपखण्ड (क), (ख) ओर (ग) में उल्लिखित सब रक्तम की पूर्णत सद्दत् करने के पण्डा ग्रुक्तिरिती बैक के पास बाकी बचे अधिशोष का अतरक बैक के भूतपूर्व सामान्य शेयरधारकों के बच आनुपानिक वितरण क्रिया जाएगा

परन्तु यह कि यदि कोई प्रश्न उठता है कि उपर्युक्त किसी उपखण्ड मे उिल्निखित खात के लिए कोई रकम शोध्य है या नही हो तो उसे भारतीय रिजर्व वैक को निर्दिष्ट किया जाएगा जिसका उस पर विनिश्चय ग्रातिम होगा।

- (viii) इस पैरा मे निर्विष्ट संग्रहण खाते मे शोध्य रकम के बारे मे केवल ग्रन्तरिती वैंक का दायित्व उस सीमा तक समझा जाएगा जो इस स्कीम मे उपबंधित हैं;
- (ix) विहित तारीख या ऐसी पूर्वत्तर स्रविध से, जो केन्द्रीय सरकार, भारतीय रिजर्व बैंक से परामर्श करने के पश्चग्त, इस प्रयोजन के लिए विनिर्दिष्ट करे, वारह वर्ष के अवसान पर, इस पैरा के खड (ii) मे निर्दिष्ट किमी ऐसी मद का, जो उस तारीख तक वसूल नही की जा मकी हो, मूच्पाकन अन्तरिती बैंक हारा भारतीय रिजर्व बैंक के परामर्श से किया जाएगा और अन्तरिती बैंक, उस मूल्याकन को ध्यान मे रखते हुए, अव-

- धारित कोई रकम, इस पैरा के खण्ड (iv) में निर्दिष्ट दायित्वों की पूर्ति के लिए आवण्यक किमी ऐसी राशि की, जो उपर्युक्त खण्ड (v), (vi) और (vii) में उपबिध्त कम श्रीर रीति से उस तारीख तक चुकायी जाने से रह गई हो, पहले उसमें से कटौती करके वितरित करेगा;
- (x) अन्तरिती बैक, पूर्ववर्ती खण्ड (i), (ii) अभीर (iii) उल्लिखित मदो के कारण वसूल किए गए ऐसे धन को, जिनकी तुग्न्त सदाय के लिए उसके द्वारा अपेक्षा किए जाने की सभावना नहीं है, अपने पास या किसी अन्य बैक या बैकों के पास व्याज वाले निक्षेपों मे, ऐसी रीति से और ऐसी अविध के लिए, जो मामले के तथ्यों और परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए उपयुक्त हो या जैमा भारतीय रिजर्व बैक निदेश दे, विनिहित करेगा। प्राद्भूत व्याज को खण्ड (iv), (v), (vi) और (vii) में निर्दिष्ट दायित्वों की पूर्ति के लिए उनमें उपदिश्वित रीति से उपयाजिन किया जाएगा।

7 किमी ग्रभिच्यक्त या विवक्षित मंविदा में किमी प्रतिकूल बात के होने हुए भी, पैरा (5) के निवधनों के प्रनुसार अतिरिती वैंक के पास खोले गए नए खाते की वाबत ब्यांज का सदाय किया जाएगा और उसे केवल उन या ग्रगले उत्तरवर्ती पैराओं के उपवधों के अनुसार ऐनी दरों पर, जो ग्रन्तरिती वक श्रनुसान कर, जमा किया जाएगा।

- 8. कोई भी निक्षेपकर्ता या ग्रन्तरक बैंक का ग्रन्य लेनदार, उसके प्रति ग्रन्तरक बैंक के किमी दायित्व की बाबत ग्रन्तरक बैंक या ग्रन्तरिनी बैंक से, इस स्कीम द्वारा विहिन सीमा के सिवाए, कोई माग करने का हकदार नहीं होगा। ।
- 9. केन्द्रीय सरकार, भारतीय रिजर्व बैंक या अन्तरिती या अन्तरक बैंक के खिलाफ किसी ऐसी बात के लिए कोई बाद या अन्य बिधिक कार्यवाहिया नहीं होगी, जो इस स्कीम के अनुसरण में सद्भावपूर्वक की गई है या की जाने के लिए आशयित है।
- 10 उत्तरवर्ती पैरा मे विनिर्दिष्ट अनुसूची मे विनिर्दिष्ट कर्मचारियों से भिन्न अन्तरक वैंक के सभी कर्मचारी सेवा मे बने रहेंगे अौर यह समझा जाएगा कि उन्हें अन्तरिती बैंक द्वारा उसी पारिश्रमिक और सेवा के उन्हीं निबंधनों और शर्तों पर नियुक्त किया गया है जो 27 अप्रैल, 1985 को कारबार बद होने के ठीक पहले ऐसे कर्मचारियों की लागू थीं.

परन्तु यह कि अन्तरक बैंक के ऐसे कर्मचारी, जिन्होंने अन्तरक बैंक या अन्तरिती बैंक को, उस तारीख के, जिसको यह स्कीम केन्द्रीय सरकार हारा मंजूर किया गया है, ठींक आगामी एक माम के अवसान के पूर्व किसी भी समय अन्तरिती बैंक के कर्मचारी न होने के अपने आशय के बारे में लिखित सूचना हारा सूचित किया है, श्रीधोणिक विवाद अधिनयम, 1947 के उपबंधी के अधीन ऐसे प्रतिकर, यदि कोई हो, और ऐसे पेंशन, उपदान, भविष्य निधि और सेव। निवृत्ति फायदे के मदाय के लिए हकदार होगे, जो 27 अप्रैल, 1985 को कारबार के बंद होने के ठींक पहले अन्तरक बैंक के प्राधिकरण नियमों के अधीन सामान्य तौर पर अनुक्रेय हो:

परन्तु यह और कि अन्तरक वैक के ऐसे कर्मचारियों की वाबत, जिनके बारे मे यह समझा जाता है कि उन्हें अन्तरिती वैंक के कर्मचारियों के रूप मे नियुक्त किया गया है, अन्तरिती वैंक के बारे में भी यह समझा जाएगा कि उसने अन्तरिती बैंक की मेवा मे रहने के दौरान उनकी छंटनी की दशा मे इन प्राधार पर छटनी प्रतिकर के मंदाय का दायित्व लिया है कि उनकी सेवा निरन्तर बनी रही है और अन्नरिनी बैंक मे उनके स्थानान्तरण से विछिन्न नहीं हुई है।

11. इस स्क्रीम से उपाबद्ध अनुसूची मे विनिर्दिण्ट व्यक्ति, विहिन तारीख को अन्तरक बैंक के कर्मचारी नहीं रह आएंगे और तत्ममय प्रवृत्त किसी विश्वि या किसी करार या संविदा में किसी वात के होते हुए भी. इस प्रकार विनिर्दिण्ट व्यक्ति, केवल ऐसे पेंगन, उपदान, भविष्य निधि और अन्य सेवानिवृत्ति फायदे के हकदार होगे. जो 27 अप्रैल, 1985 को कारबार के बन्द होने के ग्रीक पहले अन्तरक बैंक के पाधिकरण नियमों के अभीन उन्हें सामान्य तौर पर अनुशेय हो।

परन्तु यह कि नियोजन की हानि के लिए प्रतिकर, यदि कोई हो, जहां तक उसका संबंध सेवा की किमी संविदा के प्रनिविधित भाग में है. केवल वही होगा जो रिजर्व बैंक द्वारा प्रविधारित किया जाए (इस बावत जिसका ग्रवधारण ग्रंतिम ग्रोर ग्रंबद्धकर होग्रं)।

परन्तु यह श्रीर कि इसमें की किसी बात से यह नहीं समझा जाएगा कि वह श्रन्तरिती बैंक को किसी ऐसे व्यक्ति के, जिसका नाम इस स्कीम से उपावद श्रनुसूची में विनिद्दिष्ट किया गया है, ऐसी हैसियत, में श्रीर ऐसे निवंधनों श्रीर अनी पर, जो श्रन्तरिती बैंक उचित समझे, पृत्तियोजन करने से निवारित करती है।

12. अन्तरिते बैंक, उस तारेख सं, जिसको इंग स्वाम को मंज़र किया जाता है, तान वर्ष से अनिधिक अविधि के अवसान पर, अन्तरक कैंक के कर्मचारियों को वह' पारिश्रीमक और सेव' के वह निवधन और अर्ते सवाय या मज़र करेगा, जी अन्तरित, बैंक के तत्मभान रैक या प्रास्थिति के कर्मचारियों को अन्तरित; बैंक के ऐसे अन्य कर्मचारियों के समान या समतुत्य अन्तरिक बैंक के उनत कर्मचारियों के पास अर्हताए अरेर अन्भव के अक्षान रहते हुए, तामु हों।

परन्तु यह कि यदि कोई शंका या मृत्रभेद उत्पव होता ह कि उक्त कर्मचारियों में में किमा को श्रहताएं या श्रमुभेद अन्तरित बैंक के नत्वामार रैंक या प्रास्थिति के अन्य कर्मचारियों को श्रहताएं श्रीर अनुभव के ममान या समतुन्य है या नहीं या वह अन्तरित बैंक के देशनामा म कर्मचारियों का देतन नियत करने के लिए अपनाए जाने वान सिज्ञातों को किया के संबंध में है, तो शंका या मतभेद को भारतीय रिजर्व बैंक को निर्दिट किया जाएगा जिसका उस पर विनिश्चय श्रंतिम होगा।

13. यथास्थिति, अन्तरक बैक या अन्तरितः बैक क कर्मवारियों के लिए गठित किसे भविष्य निधि और या उपदान निधि के न्यास या प्रणासक, बिहित तारेख को या उसके पण्चान् यथासंभव ण ध्रः अन्तरितः बैक के लिए गठित कर्मचारे भविष्य निधि और/या उपदान निधि के न्यास को वा अन्यथा, जैसा अन्तरित बैक निदेण दे, अन्तरिक के के कर्मचारियों कायदे के लिए न्यास मे श्रारित सब धन और विविधान अन्तरित कर देवे ।

परन्तु यह कि ऐसे पश्चात्वर्ती न्यासी, वितिबानी के मृत्य में किस कभी के लिए, या विहिन नाराख के पहले किए गए किया कार्या. उपेक्षा. या व्यक्तिकम की बाबत दाया नहीं होंगे।

14 अप्रतिरते। बैक, ऐसे विवरण और जानकारा भारताय रिजर्व बैक को भेजेगा, जो भारताय रिजर्व बैक इस रुक्त में के कार्यान्वित करने के संबंध में समय-पमय पर अपेक्षा करें।

15 अस्तरिती बैंक. अस्तरक बैंक के कार्यकलाय का विवरण, ऐसे प्राप्त्य में और ऐसे कालिक शंतरालों पर, जो सारत या रिजर्थ वैंक इस निमित्त विनिर्दिष्ट करें, अस्तरक बैंक के शेयर-श्रारकों का भेजगा । ऐसे विवरणों का भेजा जाना तब रोका जाएगा जय रिजर्थ बैंक ऐसा निर्देश दें।

16 किम ऐसी सूचना या अन्य संसुचना के बार में जिसकी अन्तरितं वैक द्वारा दे जाने क अपेक्षा का जाता है, उस दशा में यह समझा जाएगा कि उसे सम्यक् व्या में दे दिया गया है, ब्रांद अन्तरक कि की पुस्तकों में रिजिस्ट कृत पते पर, जर तक कि कोई नयापता

अस्तरिका बैंक की पुस्तकों में रिजिस्ट्रीकृत न हो, प्रेषितों को संबोधित किया गया है और उसे पूर्व-संदन सामान्य डाक से भेज दिया गया है, श्रीर ऐसे सूचना उसे डाक में डाले जाते के पण्चात् अडताल स घंटे के अवसान एर तामाल का गयो समझे जाएगे । इसके अतिरिक्त किस्मा ऐसा सूचना या संयुवता को, जो सार्वजनिक हित का हो, एक या अधिक दैनिक समाचार पर्यों में, जिनका परिचालन ऐसे स्थानों पर हो जहा बैंक अपने कारखार का सब्यवहार कर रहा था, विज्ञापित किया जाएगा।

17. यदि इस स्कम के किसा उपबन्ध का निर्वचन करते समय कोई गंका उत्पन्न होता है तो मामले को भारतीय रिजर्ब बैंक को निदिष्ट किया जाएगा और उसका राथ निष्चायक होगो और अन्तरित बैंक और अन्तरिक वैंक, दोनो पर तथा इस प्रत्येक पैंक के मभी सदस्यो, निजीपकर्ताओं और अन्य लेनदारों तथा कर्मचारियों पर भ. और किसा ऐसे अन्य व्यक्ति पर जिसका इन बंकों से से किसा के संबंध से कोई अधिकार या दाधित्व है. आबड़कर होगो ।

18 यदि ्स स्कं म के उपबन्धों को प्रभावों करने में बोई कठिनाई उत्पन्न होता है तो केन्द्राय सरकार, अन्तरक और अन्तरिता बैकों को से उनमें से किया को, ऐसे निदेश, जो इस स्कःम से अनंगत न हो जार। कर सकेगा, जो केन्द्रय सरकार की, भारतीय रिजये पैक से परमार्थ करने के पण्चात् कठिनाई दर करने के प्रयोजन के लिए आवश्यक पा उपयक्त प्रत हो।

[मं 17/12/85-बी, यो III (ii)]

अन्तरक बैक मे पद

अनसुन्नी

र्वक्रमारं विवियमन अधिनियन 1949 (1949 का 10) के धारा 15 के उपधारा 7 के अधिन केन्द्र य मरकार द्वारा स्वकृत लक्ष्मा कर्माण्यल वैक लि. के विलय 11 योजना के साथ सलग्न प्रौर उसके अभ के रूप में अनुसूच.

an.

सं ,

कर्मचार। का नाम

1	2	3
	मर्वथं	
1,	ল के ध्रवन (निलंबनाध ग)	प्रबंधक प्रधान कार्यालय (भृतपूर्व प्रबंधक महरोल)
2.	न्नार, के माहन	प्रवेद्यक, गया
3	भृपिन्दर सिंह	प्रबंधक, श्रीनगर, नई दिल्ल ।
A	एम के. भल्होबा	एरिया प्रवधक, आर० ए० स मायापुर।
5	भ्राप्ट म नोटियाल	ए० ग्रो० मेरठ ((भूतपूर्व प्रबंधक, चोरपुर)
6.	स्रणोक णमी (निलंबनाव र)	प्रबंधक, बूटा मर्छ जालधर
7.	आर । एस् खण्डार।	प्रबंधक, स्रोपेरा हाऊस, बस्वई
8.	के, के, अवस्थी	प्रबंधक, इलाहाबाद
4	वाई एव शमां	प्रबंधक, ए० औ०, लखनड, (भनपूर्व प्रबंधक, कोच न)
10,	वार्ड, प. गृप्ता	प्रबंधक रिवाइ (भृतपूर्व प्रवधक गृहशौव)
11.	जे. एम. भैनः (निलंबनायं न)	प्रबंधकः चादनः चौकः, दिल्ल
12	एस के इल (निलंबनाधन)	प्रबंधकः नागपुर
1.3	के एम बन्न	प्रबंधक, लाव क्या, नई दिल्वे.

-		भारत	The state of the s	The control of the co
1		3	1 2	3
	सर्वश्र		सबय	स्वारक करका कार करे जिल्ला
	सुभाष नम्ला	लेखापाल मक्राता	३5 इन्द्र राज म हास्रा (सितबनाधःन)	प्रबक्षक कमना नगर, नई दिन्ता । (अञ्चल कार्यालय दिल्ल। मे निर्वाह
15	र्ब व नपूर	भूतपूर्व प्रवयक एरिया कार्यालय ज्ञालधर, वनमान लखापाल,	३६ एन० ४० म्र	भन्ते पर) । प्रबंधक, भोगल नई दिल्द ।
16	्नरेन्द्र विपुर	ए० ग्रा० जालधर प्रबंधक एरिया कार्यालय लखनऊ।	१७ ट० ग्राग्ट सङ	प्रविधक, श्राजादपुर, नई दिल्लो । •
17	व र शर्मा (निलबनाधन)	प्रभार अधिकार गाजियाबाद ।	(निलबनाध न)	
	ा≒ एस च्या	(भनपूर्व पबधक राजा गार्डन नई दिल्ल) ।	४ठ ए म० ₹० गोयल	एरिया प्रबन्निक ऋ≀र० बो० ऋ≀ई कक्ष प्रधान कार्यालय, नई दिल्ला ।
		प्रबद्धक, ग्राग्य एय स्वयान कार्यालय ।	39 जी एस बजा ज	तेखासल कश्मीरा गेट दिल्ली ।
19	एम् एल् र निया	गरधक कैंगिटल सिक्यरिट विभाग	40 ईरवर सिंह	प्रवयक, सकराता ।
		प्रजात कार्यालय (भृतपूर्व प्रबंधक रिनाट सर्वम, नई	‡। मुलेमान सत्ताम (निलवनाधान)	विकास ग्रीधिकारा, एरिया कायालय मेरठ ।
		दिल्ले ।		प्रबंधक एस० टी० सी० नई
20	र्व० एग० स्टहेन्द्राः	(भूतपुत्र प्रत्नधरः , पटियालः) वर्तमान ज०ट०राङ	42 केंऽ एतः राठा	प्रबंधक एम० टा० मा० न इ दिल्ला ।
		जानधर ।	43 परबीन चडढा (निलबनाधः)	लेखापाल् प्रभारः बल्लप्रगढ ।
21	ड ० रामानाथन (निलंबनाधन)	प्रवधक (विकास) मद्रास ।्	14 एव० श्रार० साहनी (निनवनाधाः)	प्रबधक, एरिया कार्यालय, चण्डीगड
42	सुरेण चन्द	भाग्यर्व बिदेण। गृद्धा कार्यभार , ृसद्रास, अब उप प्रवधक, फाट,	15 ए० के० शर्मा	प्रवधक किंग्थल ।
0.2	ग्ररजम सिद्र	बस्बई । प्रबंधिव जग्म ।	46 एस० एस० बेदी	मुख्य प्रबद्यक, केन्द्रोय लेखा नई दिस्ला । (ग्रनर्राष्ट्रोय बैकिंग
				प्रभाग प्रवान कार्यालय दिल्ले)
24	सुध र कूमार सेठ	ए० ग्रो० जातधर । (भृतपूर्व प्रवधक नलवण्ड भाई)।	47 गुरमोहन सिह	प्रवचक हापुड ।
25	स ० एग० चट्ढा (निलबनाध न)	प्रबंधक भिवानः ।	(निलवनार्घ)न) 48 श्रार० के० भास्कर	लेखापाल प्रभारो, <i>खरीरा खाल।</i>
26	बन्दर सिंग नैयर	प्रबंधक, भ्राजादपुर, नई दिल्को ।	(निनवनाधःन)	
27	स्राप्तर केंद्र सेंहन (निलंबनाथ न)	उप प्रबंधन बिक्त ।	49 सन् ग सेंठ	एरिया प्रबंधक, ऋग विभागः सई दिल्ल ।
	जोरावर मिह माहन	म न्य प्रवधक, जानल कायालप	50 परवर्गकृमार शर्मा	प्रवचक, विदेशः मुद्रा विभाग, नई विल्ला ।
	(निलबनाय न)	नई दित्ल । (पहल व नगर म)	Trees we were	एरिया प्रबद्धक, प्रधान कार्यालय ।
29	स० वे रामपाल	प्रबधक, विदेश। मुद्रा विभाग,	51 জী০ ঢুল০ সকলে	लेखामल ए० श्रो॰ जालधर ।
		कनाट सर्कम नई दित्र।	53 ग्रहण कुमार महता	
		(भ्तपूर्व प्रबधक श्रौपेरा हाऊस बस्बई में) ।	53 के ० सं 1० ग्रावर	केन्द्र।य जीन ए० द्या न० दिल्ला। (भृतपूर्वप्रवधक' कोचीन) ।
	ग्रस्थ के बोहरा ृ(निलबनत्धन)	प्रबच्च कोल बादा बम्बई ।	o4 आरं० के० दुर्गाप्रसाद	प्रबंधक श्रतर्राष्ट्रीय बैक्गि प्रभाग, प्रधान कार्योलय ।
31	व ० गम० ग्रानन्द	एरिया प्रबंधक लखनऊ ।	55 बी ० पी० श र्मी	लेखापाल, कानपुर ।
3.2	एक । एक मन्हो ला (निलंबनाध न)	लेखापाल (पटले गोल खाल मे) ।	५५ सतःश स्रावराय (नित्तवनाधोन)	प्रविधक ग्रागरा ।
3.3	प ० एल० लाम्बा (निलंबनाध न)	र्गारया प्रबंधन बस्बई ।	s 7 एन ः एलः का हरी	३प-महा प्रबद्धक, प्रधान कार्यालय चई दिल्ला ।
	্বিপ্রবাহ দ। স্থাক্ত চন্ত মুক্তালা	लेखापाल, कश्मरः गेट, दिस्ल ।	५५ सूरिन्दर मिह छात्रहा	भ्नपूर्व प्रबधक विकास नगर, कास सं गैरहाजिर ।

1	<u> </u>	3
59. वा. मृह	मा भीव	लेखापात, श्रार. ए सः। प्रधान कार्यात्मः।
60 a , ৰ ি	. ह्रांग्डा	थार. ए. सं , मायापुरः,ाई दिल्ला । (भृतपूर्वलेखापान ग्रापरा हाऊस बस्बई) ।
€1 घार. ए	ल. स्रोहरा	प्रथम, पौटे, बग्बर्ड ।
५३. क. एव	ा. जॉना	प्रबंधक (पहले नागपुर मे), ए स्राः, अस्ब ^{र्} ।
63. π π≠	न ध न्मण	प्रिया प्रबंबक, एरिया कार्याच जालंधर ।
6 4 वं गः	स चड्ढा	एरिया प्रश्चक ए ^{डि} या कार्याला लखनका
(65, et) 177	र सन्वाप	वधन, उद्गा
७६. जस्मेर	सिह	सर्वधक ए फ्रां, जालंधर ।
67 मार. ^ह	के. स ूद	प्रविधयः काटकग्रा।
(निलक्षः	नार्थान)	(पत्रिवे देशिया खान मे)
(-८. रमेण न	न्द (नित्वंबनाधीन)	प्रवधन धमरोहा ।
६६, एस, ≉	र्गः, खन्ना	प्रवधक, गुडगाँव । (भृतपूर्व प्रवंधक, रिकारी) ।
70. ईंग. अ	ाई. एम. सरपाल	प्रवधक लाजपत नगर, नई दिल्ल ।
71. वं ब	गुन्ता	प्रवधक, लारेस गाद, मई दिल्ला।
72. एस. ह	क, खुराना	पस्थक, सहारनप्र ।
73. ए. क	. पग्रवाल	प्रवधकः पिलर गंज, लुधियाना ।
७ ॥ प्रमोद	कृमार मि न ल	प्रवधक, भार, ए सा, सायापुरा, प्रधान जागोलय ।
७५. अस्वस्त	भि त्	प्रवतान, मायापुरा, नई दिल्ला ।
76. के एक	स. म∤टा	प्रवंधक, बूरा बाजरर, कल्कला।

S.O. 625(E).—Whereas on an application made by the Reserve Bank of India under sub-section (1) of section 45 of the Banking Regulation Act, 1949 (10 of 1949) the Central Government has made, under sub-section (2) of the said section 45 an order of moratorium in respect of the Lakshmi Commercial Bank Ltd., under sub-section (2) of the said section.

And whereas the Reserve Bank of India in exercise of the powers conferred by sub-section (4) of section 45 of the said Act has prepared a scheme tor the amalgamation of the Lakshmi Commercial Bank Ltd., New Delhi with Canara Bank.

And whereas the Reserve Bank after having sent the said scheme in draft to the banks concern in accordance with the provisions of sub-section (6) of the said section and after having considered the suggestions and objections received in regard to the said scheme has modified that scheme and forwarded it to the Central Government for sanction.

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (7) of section 45 of the said Act, the Central Government hereby sunctions the scheme on and subject to the terms and conditions hereinalter mentioned.

- (1) The Lakshmi Commercial Bask Ltd., New Delhi shall be the transferor bank and the Canara Bank shall be the transferee bank.
- (2) As from the date which the Central Government may specify for this purpose under sub-section (7) of section 45 of the said Act (hereinafter referred to as the prescribed date) all rights, powers, clams demands, interest, authorities, privileges, benefits, assets and properties of the transferor bank, movable and immovable, including premises subject to all ineidents of tenure and to the rents and other sums of money and convenants reserved by or contained in the leases or agreements under which they are held, all office furniture, loose equipment, plant, apparatus and appliances, books, papers, stocks of stationery, other stocks and stores, all investments in stocks, shares and securities, all bills receivable in hand and it transit, all cash in hand and on cuttent or deposit a count (including money at call or short notice) with banks, buillion, all book debts, morigage debts and other debts with the benefit of securities, or any guarantee therefore, all other, if any, property rights and assets benefit of all guarantees in connection with the business of the transferor bank shall, subject to the other provisions of this scheme, stand transferred to, and become the properties and assets of, the transferce bank; and as from the prescribed date all the liabilities, duties and obligations of the transferor bank shall be and shall become the liabilities, duties and obligations of the transferee bank to the extent and in the manner provided hereinafter.

Without prejudice to the generality of the foregoing provisions, all contracts, deeds, bonds, agreements, powers of attorney, grants of legal representation and other instruments of whatever nature subsisting or having effect immediately before the prescribed date shall be effective to the extent and in the manner hereinafter provided against or in favour of the transferee bank and may be acted upon as if instead of the transferor bank the transferee bank had been a party thereto or as if they had been issued in favour of the transferee bank,

If on the prescribed date any suit, appeal or other legal proceedings of whatever nature by or against the transferor bank is pending, the same shall not abate, or be discontinued or be in any way prejudicially affected, but shall subject to the other provisions of this scheme, be prosecuted and enforced by or against the transferce bank.

If according to the laws of any country outside India the provisions of this scheme, by themselves, are not effective to transfer or vest any asset or liability situated in that country which forms part of the undertaking of the transferor bank to or in the transferee bank, the affairs of the transferor bank in relation to such assets or liability shall, on the prescribed date, stand entrusted to the chief executive officer for the time being of the transferee bank and the

chief executive Officer may exercise all powers and do all such acts and things as would have been exercised or done by the transferor bank for the purpose of effectively winding up its affairs. The caref executive officer shall take all such steps as may be required by the laws of any such country outside India for the purpose of effecting such transfer or vesting and in connection therewith the chief executive officer may, either himself or through any person authorised by him in this behalf, realise any assets or diseasing any liability of the transferor bank and transfer the net proceeds thereof to the transferce bank.

(3) The books of the transferor bank shall be closed and balanced and balance shees prepared in the first instance as at the close of business on the 27th April 1985 and thereafter as at the close of business on the date immediately preceding the prescribed date and the balance sheets shall be got and the dand certified by the chartered accountant or a firm of chartered accountants approved or nominated by the Reserve Bank of India for the purpose.

A copy each of the balance sheets of the transfefor bank prepared in accordance with the provisions of the foregoing paragraph, shall be filed by the runsferor bank with the Registrar of Companies as scon as possible after it has been received and thereafter the transferor bank shall not be required to prepare balance sheets or profit and loss accounts, or to lay the same before it members or file copies thereof with the Registrar of Companies or to hold any annual general meeting for the purpose of considering the balance sheet and accounts or for any other purpose or to comply with the provisions of section 159 of the Companies Act, 1956, and it shall not thereafter be necessary for the Board of Directors of the transferor bank to meet as required by section 285 of that Act.

- (4) I. The transferee bank shall, in consultation with the transferor bank, value the property and assets and rockon the liabilities of the transferer bank in accordance with the following provisions, namely:
- (a) Investments other than Government countries shall be valued at the market rates prevailing on the day immediately proceeding the prescribed date.
- (b) (i) Government securities shall be valued as on the day immediately preceding date in actidance with the principle laid down in the notification pseud by Reserve Bank of India for the purpose et action 24 of the Banking Regulation Act, 1949.
- (ii) The securities of the Central Go ernment such as Post Office Certificates Treasury Savings Deposit Certificates and any other securities or certificates issued under the small savings scheme of the Central Government shall be valued at their face value or the encashable value as on the said date, whichever is higher.
- (iii) Where the market value of any Government security such as the Zamindari Abolition Bonds or other similar security in respect of which the principal is payable in instalments is not ascertainable or is, for any reason, not considered as reflecting the

- fair value thereof or as otherwise appropriate, the security shall be valued at such an amount as is considered reasonable having regard to the instalments of principal and interest remaining to be paid, the period during which such instalments are payable, the yield of any security issued by the Government to which the security pertains and having the same or approximately the same maturity, and other relevant factors.
- (c) Where the market value of any security, share, debeature, bond or other investment is not considered reasonable by reason of its having been affected by abnormal factors, the investment may be valued on the basis of its average market value over any reasonable period.
- (d) Where the market value of any security, share, debenture, bond or other investment is not ascertainable, only such value, if any, shall be taken into account as is considered reasonable, having regard to the financial position of the issuing concern, the dividends paid by a during the preceding five years and other relevant factors.
- (c) Premises and all other immovable properties and any assets acquired in satisfaction of claims shall be valued at their market value.
- (f) Furniture and fixtures, stationery in stock and other assets, it any, shall be valued at the written down value as per books or the realisable value as may be considered reasonable.
- (g) Advances including bills purchased and discounted, book debts and sundry assets, will be scrutimised by the transferee bank and the securities, including garacters, held as cover therefor examined and verified by the transferee bank. Thereafter the advances, including portions thereof, will be classified into two categories, namely. 'Advances considered good and readily realisable" and "Advances considered not readily realisable and or doubtful of recovery".
- Il L'abr'ines for purposes of this scheme shall include all centingent liabilities which the transferee bank may reasonably be expected or required to meet out of its own resources on or after the prescribed date.
- III. Where the valuation of any asset cannot be determined on the prescribed date, it may, with the approval of the Reserve Bank of India be treated partly or wholly as an asset realisable at a later date.

In the event of any disagreement between the transferee bank and the transferor bank as regards the valuation of any asset and or the classification of any advance and or the determination of any liability, the matter shall be referred to the Reserve Bank of India, whose opinion shall be final, provided that until such an opinion is received the valuation of the item or portion thereof by the transferee bank shall provisionally be adopted for the purpose of this scheme.

It shall be competent for the Reserve Bank in the event of its becoming necessary to do so, to obtain such technical advice as it may consider to be appropriate in connection with the valuation of any such item of asset or determination of any such item of

liability, and the cost of obtaining such advice shall be payable in full out of the assets of the transferor bank.

The valuation of the assets and the determination of the liabilities in accordance with the foregoing provisions shall be binding on both the banks and the members and creditors thereof.

- (5) In eonsideration of the transfer of the property and the assets of the transferor bank to the transferee bank the transferee bank shall discharge the liabilities of the transferor bank to the extent mentioned in this and the following clauses, namely;
- (a) Any sums deposited by any employee of the transferor bank with that bank as staff security deposits together with interests, if any, accrued thereon up to the prescribed date and all other outside liabilities as on the prescribed date excluding deposits shall be paid or provided for in full.

EXPLANATION:

For the purpose of this paragraph, interest payable on a deposit up to the prescribed date shall be regarded as part of the concerned deposit.

(b) In respect of every savings bank account or current account or any other deposit including a fixed deposit, cash certificate, monthly deposit, deposit payable at call or short notice or any other deposit by whatever name ealled with the transferor bank and every other account not covered by clause (a), including interest to the extent payable under this scheme, the transferee bank shall open with itself on the prcscribed date a corresponding and similar account in the name of the respective holder(s) thereof crediting thereto the pro rata share available in respect of each of the accounts out of the assets referred to in paragraph (4) as valued for the purposes of this seheme on the prescribed date, after excluding from the said assets as so valued the advances considered not readily realisable or bad or doubtful of recovery, any asset or portion of an asset not valued on the prescribed date and any amount needed for the payments or provisions mentioned at clause (a) above and after adding to the said assets as so valued the aggregate amount of the payments made in terms of clause (a) (i) of paragraph 2 of the moratorium order dated the 27th April 1985 issued to the transferor bank:

Provided that any payment made from a deposit account on, or after the close of business on 27th April 1985 and before the prescribed date, shall be reckoned towards the amount to be credited under this sub-paragraph and, accordingly the amount to be credited shall be the pro rata share less the amount of such payment:

Proivded further that where the transferee bank entertains a reasonable doubt about the correctness of the entries made in any particular account it may with the approval of the Reserve Bank, withhold the credit to be made in that account in terms of clause (b) above till the transferee bank is able to ascertain the correct balance in such accounts.

EXPLANATION:

The term 'pro rata' shall, insofar as it occurs in this paragraph, mean in proportion to the respective amounts remaining due as at the close of business on the 27th April 1985 (together with interest payable up to the date immediately preceding the prescribed date) and shall, insofar as it occurs elsewhere in this scheme, mean 'in proportion to the respective amounts remaining due at the time of the payment or distribution'.

(c) After the credits refered to in clauses (b) above have been afforded, the transferee bank shall, with the least possible delay bu; in any case not later than three months from the prescribed date, furnish to the Deposit Insurance and Credit Guarantee Corporation established under the Deposit Insurance and Credit Guarantee Corporation Act, 1961 (hereinafter referred to as the Corporation) a list complying in all respects with the requirements of sub-section (1) of section 18 of that Act and thereafter whenever amounts referred to in sub-section (2) of section 18 of that Act are received from the Corporation, the transferee bank shall credit each of the accounts referred to in clause (b) above, within seven days from the date or dates on which the amounts are received, to the extent of the sums due to that account in accordance with sub-section (2) of section 18 of that Act:

Provided that :-

- (a) if any account referred to in clause (b) has been closed or has matured for payment at the time when any amount for credit to that account is received from the Corporation, the payments to the person entitled to the said amount shall be made by the transferee bank in cash;
- (b) in case the person entitled to any amount referred to in clause (b) cannot be found or is not readily traceable, provision for the amount due to such person shall be made and accounted for separately on the books of the Corporation itself and it shall not be necessary for the Corporation to pay the amounts to the transferee bank unless the person entitled to the amount is found or traced and the Corporation has decided to make the payment in respect of that person through the transferee bank.
- (c) On the prescribed date, the entire amount of the paid up capital and reserves of the transferor bank shall be treated as provision for bad and doubtful debts and depreciation in other assets of the transferor bank and the rights of the members of the transferor bank shall, in relation to the transferee bank, be as provided for in paragraph (6) below:

(6) In respect of

(a) every account mentioned in clause (b) of the preceding paragraph, the balance in the account, if any, remaining uncredited in terms of that clause and clause (c) and

(b) every share in the transferor bank, the amount of which was treated as paid-up towards share capital by or on behalf of each shareholder immediately before the prescribed date and/or amount paid on account of the calls made by the transferee bank in pursuance of clause (i) below;

shall be treated as a collection account and may be entered as such in the books of the transferee bank and payments against the account shall be made in the following manner, namely;

- (i) (a) the transferee bank shall, in the first instance, call upon every person who on the prescribed date was registered as the holder of a deferred share in the transferor bank (or would have been entitled to be so registered) to pay within three months from such date or dates as may be specified, the uncalled amount remaining unpaid by him in respect of such share or shares and the calls in arrears, if any and thereafter, if it is found to be so necessary, every person who was, as on the prescribed date, registered as the holder of an ordinary share of the transferor bank (or would have been entitled to be so registered) to pay within three months from such date or dates as may be specified, the uncalled amount remaining unpaid by him in respect of such share or shares or the calls in arrears, if any;
- (b) the transferee bank shall take all available steps having regard to the circumstances of each case to demand and enforce the payment of the amounts due under clause (a) together with interest at \$x\$ per cent per annum for the period of the default;
- (ii) the transferee bank shall in respect of the advances, bills purchased and discounted, book debts end sundry debts and other assets, which are classified as "Advances considered not readily realisable and or bad or doubtful of recovery", or which are or may be realisable wholly or partly after the prescribed date in terms of paragraph (4) above, take all available steps having regard to the circumstances of each case to demand and enforce payment, provided, however, that if the amount of a debt or asset exceeds Rs. 50,000, the transferee bank shall not except with the approval of the Reserve Bank of India;
 - (a) enter into a compromise or arrangement with the debtor or any other person or write off any such debt or asset.
 - (b) sell or otherwise dispose of any securities transferred to it or any asset taken over by it.
- (iii) the transferee banks shall in addition take all available steps having regard to the circumstances of each case to demand and enforce the payment of the amounts, if any, awarded as damages by the High Court against any promoter, director, manager or other officer of the transferor bank under section 45L of the Banking Regulation Act, 1949, read with section 45H thereof and also with section 543 of the Companies Act, 1956;
- (iv) the transferee bank may, out of the realisations effected by it on account of the items mentioned in clauses (i), (ii) and (iii) above,, make payment or provision in respect of any contingent liability to

the extent that the provision made therefor under paragraph (5) (a) proves to be inadequate, as also with the prior approval of the Reserve Bank, in respect of any liability whether contingent or absolute which was not assessed in terms of paragraph (4) above and has arisen or been discovered on or after the prescribed date;

- (v) the transferee bank shall out of the realisations effected by it on account of the items mentioned in clauses (i), (ii) and (iii) above after deducting therefrom the expenditure incurred for the purpose and, with the approval of the Reserve Bank of India, such other expenses as may be considered reasonable and the amount appropriated therefrom in terms of clause (iv), above, or out of the balance, if any, which may be available from out of the provision in respect of contingent liabilities as reckoned for the purposes of this scheme after the extent of such liabilities has finally been ascertained.
 - (a) pay to the Corporation the amount received by the transferee bank from the Corporation under sub-section (2) of section 18 of the Deposit Insurance and Credit Guarantee Corporation Act, 1961 and the amount, if any, provided for by the Corporation, and
 - (b) pay, in the case of depositors in respect of whom no amounts have been received by the transferce bank from the Corporation, the months due in respect of the eollection accounts, and in the case of depositors in respect of whom any amounts have been received by the transferce bank from the Corporation or have been provided for by the Corporation the balance if any due to them in their collection accounts after the amounts due from the said accounts to the Corporation in respect of the payment made or provided for by the Corporation have first been paid in accordance with the provisions of sub-clause (a) above;

Provided that the amount due to the Corporation shall, if it becomes necessary so to do, be provided for in the books of the transferee bank and be paid to the Corporation in the manner specified in clause (b) of regulation 22 of the Deposit Insurance and Credit Guarantee Corporation General Regulations, 1961.

Provided further that the transferee bank shall make the payments referred to in clause (b) above,

- (i) if the corresponding or similar account mentioned in clause (b) of paragraph (5) has not been closed or has not matured for payment, by credit to that account, and
- (ii) if the said account has been closed or has matured for payment, in cash;
- (vi) The amounts due to the Corporation in terms of sub-clause (a) of clause (v) above and the amounts due to the collection accounts of the depositors in terms of sub-clause (b) of that clause shall rank equally among themselves, and if they cannot be paid in full shall abate in equal proportions;

- (vii) After the payments referred to in clause (v) of this paragraph have been made or provided for in full, the transferee bank shall, out of the ballness of the amounts referred to in clause (1) which may be available to it, make payments of o rata to see the amounts, if any, due to the accounts of the former shareholders, of the transferor bank in the manner and to the extent specified below.
 - (a) in the first place, the amount, if any due to the accounts of the former reference shareholders of the transfer a bank till payment in full against all the accounts has been made;
 - (b) in the second place, the amounts, if any, due to the accounts of the former ordinary shareholders of the transferor bank ill payment in full against all the teep ats has been made; and thereafter;
 - (e) in the third place, the amounts, if any, due to the accounts of the former deficied shareholders of the transferor bank till payment in full against all the accounts has been made:
 - (d) after all the amounts mentioned in subclauses (a), (b) and (e) above have been paid in full, the surplus, if any, remaining in the hands of the transferee bank shall be distributed pro rata among the former ordinary shareholders of the trusteror bank.

Provided that if any question arises whether any amounts are due against an account mentioned in any of the above sub-clauses, it shall be referred to the Reserve Bank of India whose decision thereon shall be final.

- (viii) the amounts due to the collection accounts referred to in this paragraph shall be deemed to be a liability of the transferce bank only to the extent provided for in this scheme;
- (ix) on the expiry of twelve years from the precribed date or such earlier period as the Central Government after consulting the Reserve Bank of India may specify for this purpose, any item referred to in clause (ii) of this paragraph which may not have been realised by that date shall be valued by the transferce bank in consultation with the Reserve Bank of India and the reassferee bank shall distribute any amount or amounts determined in the light of that valuation after deducting therefrom first any sum necessary for meeting the liabilities referred to in clause (iv) of this paragraph which may remain unsatisfied as on that date in the order and the manner; rovided in clause (v), (vi) and (vii) above.
- (x) The transferee bank shall invest such moneys realised on account of items mentioned in the preceding clauses (i), (ii) and (iii) as are not likely to be required by it for immediate payment, in interest bearing deposits with itself or with any other bank or banks, in such manner and for such periods as may be appropriate having regard to the facts and circumstances of the case or as the Reserve Bank of India may direct. The interest accrued shall be applied for meeting the liabilities referred to in clause (iv), (v) (vi) and (vii) in the manner indicated therein

- (7) Notwithstanding anything to the contrary contained in any contract, express on implied, interest shall be paid in respect of the new accounts opened with the transferce bank in terms of paragraph (5) and credited in accordance with the provisions of that or the next succeeding paragraphs only at such rates as the transferce bank may allow.
- (8) No depositor or other ereditor of the transferor bank shall be entitled to make any demand against the transferor bank in the transferee bank in respect of any hability of the trasferor bank to him except to the extent prescribed by this scheme.
- (10) All the employees of the transferor bank other than those specified in the schedule referred to in the succeeding paragraph shall continue in service and be deemed to have been appointed by the transferee bank at the same remaneration and on the same terms at d conditions of service as were applicable to such employees immediately before the close of business on 27th April 1485.

Provided that the employee, of the transferor bank who have, by nodes in writing given to the transferor or the transferce bank at any time before the expiry of one month next following the date on which this scheme has been sanctioned by the Central Government, intimated their mention of not becoming employees of the transferce bank, hall be entitled to the payment of such compensation, if any, under the provisions of the Industrial Disputes Act, 1947 and such pension, gratify, provident fund and other retirement benefits as may be ordinarily admissible under the rules of authorisations of the transferor bank immediately before the close of busines; on 27th April 1985.

Provided further that the transferee bank shall in respect of the employees of the transferor bank who are deemed to have been appointed as employees of the transferee bank be deemed also to have taken over the hability for the payment of retrenchment compensation in the event of their being retrenched while in the service of the transferee bank on the basis that their service has been continuous and has not been interrupted by their transfer to the transferee bank.

(11) The persons specified in the schedule annexed to this scheme shall on the prescribed date cease to be the employee of the transferor bank and notwith-standing anything contained in any law for the time being in force or any agreement or contract, the persons so specified shall be cutifled to and only to such pension, gratuity, providend fund and other retirement benefits as may be ordinarily admissible to them under the rules or authorisations of the transferor bank immediately before the close of business on 27th April 1935.

Provided that the compensation, if any, for the loss of employment, so far as it relates to the unexpired

portion of any contract of service, shall be such and only such as may be defermined by the Reserve Bank (whose determination in this respect shall be final and binding).

Provided further that nothing herein shall be deemed to prevent the transferee bank from re-employing any person whose name has been specified in the schedule annexed to this scheme in such capacity and on such terms and conditions as the transferee bank may deem fit.

(12) The transferee bank shall, on the expiry of period not longer than three years from the date on which this scheme is sanctioned, pay or grant to the employees of the transferor bank the same remuneration and the same terms and conditions of service as are applicable to the employees of corresponding rank or status of the transferee bank subject to the qualifications and experience on the said employees of the transferor bank being the same as or equivalent to those of such other employees of the transferee bank.

Provided that if any doubt or difference arises as to whether the qualifications or experience of any of the said employees are the same as or equivalent to the qualifications and experience of the other employees of corresponding rank or status of the transferce bank or as to the procedure of principles to be adopted for the fixation of the pay of the employees in the scales of pay of the transferce bank, the doubt or difference shall be referred to the Reserve Bank of India whose decision thereon shall be final.

(13) The trustees or administrators of any provident fund and or gratuity fund constituted for the employees of the transferor bank or as the ease may be the transferor bank shall on or as soon as possible after the prescribed date transfer to the trustee of the employees provident fund and or gratuity fund constituted for the transferee bank, or otherwise as the transferee bank may direct, all the monies and investments held in trust for the benefit of the employees of the transferor bank.

Provided that such latter trustees shall not be liable for any deficiency in the value of investments, or in respect of any act. regicet, or default done before the prescribed date.

- (14) The transferee bank shall submit to the Reserve Bank of India such statements and information as may be required by the Reserve Bank of India from time to time regarding the implementation of this scheme.
- (15) The transferee bank shall furnish to the share-holders of the transferor bank a statement of affairs of the transferor bank in such form and at such periodical intervals as the Reserve Bank of India may specify in this behalf. The sending of such statements shall be discontinued when so directed by the Reserve Bank.
- (16) Any notice or other communication required to be given by the transferee bank shall be considered to be duly given if addressed and sent by pre-paid 7 65 GU85-4

ordinary post to the addressee at the address registered in the books of the transferor bank, until a new address is registered into the books of the transferee bank, and such notice shall be deemed to be served on the expiry of fortyeight hours after it has been posted. Any notice or communication which is of general interest shall be advertised in addition in one or more daily newspapers which may be in circulation at the places, where the transferor bank was transacting its business.

- (17) if any doubt arises in interpreting any of the provisions of this scheme, the matter shall be referred to the Reserve Bank of India and its opinion shall be conclusive and binding on both the transferee and transferor banks, and also on all the members, depositors and other creditors and employees of each of these banks and on any other person having any rights or liability in relation to any of these banks.
- (18) If any difficulty arises in giving effect to the provisions of this scheme, the Central Government may issue to the transferor and the transferee banks or to either of them such directions not inconsistent with this scheme as may appear to the Central Government, after consulting the Reserve Bank of India, to be necessary or appropriate for the purpose of removing the difficulty.

[F. No. 17]12[85-BO(III)-(ii)]

SCHEDULF

Schedule Attached to and forming part of the Scheme for the Amalgamation of the Lakshmi Commercial Bank Ltd.

As sanctioned by the Central Government under Sub-section (7) of section 45 of the Banking Regulation Act 1949 (10 of 1949)

Sl. No.		Designation in the transferor
1	2	3
1.	Shri G.K. Dhawan (Under Suspension)	Manger, HO. (formerly M nager Mehrauli)
2.	Shri R. K. Sawhney .	Manager, Gaya,
3.	Shri Bhupinder Sir.gh .	Manager, Tri Nagar, N. Deihi
4.	Shri M.K. Malhotra .	Arec Manager, RAC, Mayanuri.
5.	Shri R.C. Nautiyal .	A.O. Meerut (Formerly Manager, Chandpur).
6.	Shri Ashok Sharma (Under Suspension)	Mandi, Jalandhar
7.	Shri R.S. Khandarı	Manager, Opera House, Bombay.
8.	Shri V.K. Awasthı .	Manager, Allahabad.
9.	Shri Y.L. Sharma	Manager, A.O. Lucknow (formerly Mgr. Cochin.).
10.	Shri Y.P. Gupta	Manager, Rewari (tormerly Manager Gurgaon)
	Shri J.M. Mam (Under Suspension)	Manager, Chandnichowk Delhi
12.	Shri S.K. Dhall . (Under Suspension)	Manager, Nagpur.
13.	Shri K.S. Bajaj	Manager, Lal Quan, N. Delhi.

26		THE GAZOTES OF INDEX 15	TRAOR THMARY	[PART 61- Sec. 2614]
Sr. Ivo.	Present of the entropy	in the free was a sign of the first term.		The state of the second manager
1	Sha garactical arts		11 - 13 केले होती पे संकार पे सेंट कर	Secretary Francisco
	Chrys D. Papers	. Torner to be also and Thine.	(Contracting purchase)	Figure 1
	•	The Time to the committee; And other than	30 - 1 le 1 le Ele Modhi 11 le Slyr 2 saegen Elweb 1	the second of the second River and the second secon
15	าราย ได้เปลาสน้ำเรา ใบโดยการ	er Statigue, be en blog Freiband.	(Challe the Debus)	14-14
17.	that C.F. Sharma Tinder aspension)	. Office-the turns, Chairland,	क्ष, Shif H.A. Sealing U. mer tære, Jami	Altangen Art. Office, Character grid
18,	NI.M. Chopra	. (Post is Manager, Proc Cirilen New Delhis Desert, JAC 910.	46. Shri N.K. Sharata 46. Shri S.S. Bedi .	Charles, See Feeled Charles Manager, Cyared Accounts,
19.	: bri M.L. Kelia	Managor, Capital Secrety Deptt. H.O. Gornerly Manager, Con. Circus, New Delby.	so. 300 (5.5, Eq.)	Now Belli Gorousty at foot - molory Bousing Division, H. O. olew Delhi.
70	Shor P.S. Malhotra	Oreviously Manager, Papala)	47. Shri Garmoban Singh	Manger, Hapar
20175	CARLL - Tree 14, provides	Presently at G.T. Road,	(Under sesponsion) AS Shir R.K. Ehoskar	Accountant-in-Clurge Rheneri
	est the Theorem Indian	Salandhar.	(Chuck a chabonal)	Felial
	(Under suspension)	Menager (Dev), Madras.	49. Shei Shiish Seili .	Area Manager, Louis Depth, New Delby.
22.	Shri Suresh Chandra	, Lormany Foreign Explorage in- charge Madris Now Sub- Monta, Fort, Bombay.	50. Shei Prazecu Kumar Sharma	Madager, Folgiga Fach, Dopt.
73	Chri Agan Siayb	Matteer, Institute		Aria Managa, Head Office.
	Teë Suffie Numbe Se			Common the A.O. Edwards a
		(Firmingly Missinger Valueties Blade	DS OFFICE CONTRACTOR	Pennis Crie, A.O. Jana, Mini normay Managar at Cochio.
	Shri ,C.S. Cleatha (Under Suspension)	, Minnager, Bhiwani,	 Shii O.K. Duran Pressol 	Matrice, intertwicional Banking Profess, R.O.
	Sho Balbir Sinch	Manager, Acciona, No. Trolly	55 Shri B.P. Sharm	Antenial att Klauthan
40.	Nayyar Jacqui	Assertation of the contract of	56. Shri Satish Oberesi (Undar supperciona	At major. Area.
	(Under mispension)	, Sun-Manuer, Vinc.	•	Deputy Getteral Manager, Heed Office New Yallu.
		h . Chief Mareyer Zmid Office,	50 Shri Donnder Single Chlabra	Formerly Manneger, Vikin Nature (Abstraining from work)
	(Under suspension)	New Dolhi, (formarly at Trinagas).	59. Shri V, Subha Rao 🗇	Accountant, RAC, Hand Office.
29.	Sbri C.K. Rempul	Manuser, Foreign Exchange Dept. Con. Crous, New Polli florately Manuser of Opera House, at	60, Shri E,B (H. q.))	RAC Mayapuri, N. Delhi after π et) Accountant, Opera, (A ness B unb. v)
		Bombay),	61. Shri E.L. Vohn.	Musayer, Port Bombay,
30,	Shri N.K. Vohra (Under suspension)	. Manager, Koliwala, Bombay,	67. Shri K.S. Jolly	Monager, (previously as Nagour A.O. Bombay,
	Shri B.M. Anand Shri Malhotra	Area Manager, Lucknow, . Accountant, Farlier at Goldkin,	63. Shri A.S. Bungul	Area Manarya, Area Onice, Jahandhar,
	(Under suspension)		64. Shri P.S. Chudha	Area Manager, Area Office,
33.	Shri P.L. Lamba (Under suspension)	. Area Manager, Bombay.	65. Shri B.L. Sanwal	Lucknow, Manager, Radaur,
34.	Shri R.N. Malhotra	. Accountant Restructe Cate	66. Shri Josmer Singh	Michiger, A.O. Balandhar,
75	Shri Inder Rai Malha	Delhi. iro Matuyer, Kutolo Migar, New	67. Shi R.R. Sood (Elseler suspension)	Manuelle, Kerkinnen Galacti al 152 (Kabart)
272'1	(Under suspension)	Delhi. (Deawing subsistence after thee	68. Chai Name ia Eliana	Mena, er. Approbe.
	•	at Z.O. Deihi).	69. Shrift C. Rhann	Malagra, Gurgada
36.	Shri N.K. Suri	. Manuser, Bhoptal, New Mall	70. Who D.J.M. Sarpet	Hornerly Manurer, Restar h. Martin, Daniel House, K. Falor
37 .	Shri T.R. Sethi (Under suspension)	. Manugot, Astipur, Nov. Delbi.		Mark of Lancing Road, Son Don
38.	Shri S.K. Goel	. Area Marries. RET Cell, NO.	72. Shil S.K. Kalanda 73. Shil A.F. Agened	Albertage Contraction Ware-the, helike Alberta Euclidena
39.	Shri G.S. Bajaj .	. Accountant, Kash the Long.	Midtist.	Makigat, PAC Algebrai, Meng
nt.	Shri Ishva: Hingh			Burney of the volume of W. O. Bil.
317	THE WAY OF THE SELECTION OF THE SELECTIO	HANGER OF THE THE TANK OF THE	TAL EBALLS CONT.	Walte & Par Bover Cabridge

का. ग्रा. 626(ग्र):—बैंकिंग विनियमन ग्रिधिनियम, 1949 (1949 का 10) की धारा 45 की उपधारा (2) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए ग्रौर दिनांक 27 ग्रप्रैल, 1985 की इस मंत्रालय की ग्रिधिसूचना सं. एफ. टा. एस./1/85-वं . ग्रौ.-III में संशोधन करते हुए, केन्द्रीय सरकार, एतद्द्वारा निदेश देती है कि लक्ष्मी कर्माशयल बैंक लि., नई दिल्लों के संबंध में उसके द्वारा जारी किए गए स्थगनादेश 23 ग्रगस्त, 1985 तक जिसमें यह तारीख भा शामिल है, लागू रहेगा।

[सं. 17/12/85-बी. ग्री.-III(iii)] शरद केलकर, ग्रपर सचिव S.O. 626(E).—In exercise of the powers conferred by sub-sction (2) of section 45 of the Banking Regulation Act, 1949(10 of 1949), and in modification of this Ministry's Notification F. No. TS|1|85-BO III dated the 27th April, 1985, the Central Government, hereby directs that the order of moratorium made by it in respect of the Lakshmi Commercial Bank Limited, New Delhi, shall remain in force upto and including the August 23, 1985.

[No. F. 17|12|85-BO III-(iii)] S. M. KELKAR, Addl. Secy.